RS

राधास्वामी दयाल की दया ! राधास्वामी सहाय !!

शिव

वर्ष १] जुलाई सन् १९५५ [तरंग ५

गुरु रूप

कोई बताये कैसे गुरु को रिझाऊँ !
गुरु को रिझाऊँ प्यारे गुरु को मनाऊँ !

१—मेरे मन में मेरे तन में, छिन छिन पल पल मेरे पन में।
घर बाहर पर्वत में बन में, ठौर ठौर गुरु पाऊँ॥ कोई बताये०

२—दिन प्रति दिन और साँझ प्रभाती, गुरुमूरत हिये व्यापक पाती।
गुरु हैं तेल दिया गुरु बाती, आरति किसकी सजाऊँ ॥कोई०

३—पात पात में गुरु की बासा फूल फूल में गुरु का विलासा।
अचरज अद्भुत अजब तमासा क्या मैं फूल चढ़ाऊँ ॥ कोई०

४—मसजिद मन्दिर काबा काशी, सब में रमे गुरु अविनासी।
गुरुसों तीरथ वर्त उजासी, अब किस धाम को जाऊँ ॥ कोई०

५—भक्ति सम्प्रदा गुरु ने साजी, चर और अचर में रहे विराजी।
मैं तोहिं पूछूँ पंडित काजी केहि विधि ध्यान लगाऊँ ॥ कोई०

६—गुरु तो व्याप रहे घट घट में, गुरु ही बसे घट पट और तट में।
कौन पड़े जग के खट पट में, किसका नाम सुनाऊँ ॥ कोई०

७—निराधार गुरु जगदाधारी, हित अनहित सब के हितकारी।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, निरख २ हरषाऊँ ॥ कोई०

भूमिका

मोतियों के सिलसिले के नावेलों में यह सबसे छोटा कहा जा सकता है परन्तु यह किसी से कम उपदेश जनक और शिक्षाप्रद नहीं है।

यह ऐतिहासिक घटना के आधार पर लिखा गया है। इस से पता लगेगा कि पहिले मुसलमान बादशाह कितने विशाल हृदय और उदार चित्त हो गये हैं।

मनुष्य जीवन के सफल बनाने के लिये सहन शीलता गम्भीरता, सभ्यता और उदारता आवश्यक अङ्ग हैं। इनका प्रभाव बहुत पड़ता है। इनकी सहायता से मनुष्य बड़े से बड़े शत्रु के हृदय को भी अपनी मुट्ठी में कर सकता है।

आशा है जो इसे ध्यान के साथ पढ़ेंगे उन्हें सोचने विचारने के लिये बहुत सी बातें मिलेंगी।

ता० १५ मार्च
सन् १९२६

शिवव्रत लाल
राधास्वामी धाम

राधास्वामी !
राधास्वामी दयाल की दया !! राधास्वामी सहाय !!!

गिरहदार मोती

पहिला अध्याय

बाबर मरेगा

"बाबर मरेगा।"

"क्यों ?"

"साँगा के नाम पर उसे बलिदान करना चाहिये। उसने चित्तौड़ के बाँके शूर बीरों को लड़ाई में एक एक करके तलवार के घाट उतरवा दिया। संग्राम राजपूत कुल तिलक था। साहस उत्साह, वीरता और सहन शीलता की जीती जागती मूर्ति था! संसार को ऐसे वीर पुरुष का दर्शन पहिले कभी नहीं प्राप्त हुआ था। राजस्थान के अस्सी राजे उसके झण्डे के नीचे धर्म युद्ध करने के लिए निकले थे। राजाओं की इतनी बड़ी जत्था पहिले कभी नहीं इकट्ठी हुई थी। जब राजपूत उमड़ते हुये बादल की तरह लड़ने के लिये निकले वह दृष्य देखने ही के योग्य था। बाँके राजपूतों की भीड़ झूमते हुये मस्त हाथियों के दल की तरह मैदान में आ गई। इनकी संख्या भी कम नहीं थी। अस्सी हज़ार से कम योधा नहीं थे। यह जत्था क्या थी! एक पहाड़ी बाढ़ थी जो उमड़ती और उबलती हुई संग्राम भूमि में आई और बाबर के सामना करने में वैसे ही आँखों से ओझल हो गई जैसे बाढ़ का पानी रेतीली भूमि में सूख जाता है।

"तो इस में बाबर का क्या दोष था ? दो लड़ने वाले लड़े एक को तो मरना ही था। बाबर जीता। राना साँगा मारा

गया। लड़ाई तो लड़ाई ही है। किसी न किसी को तो हारना ही था। दोनों अच्छे लड़ाके थे। सामना हुआ। बलवान ने अबल को धर दबाया।"

"तुम संग्राम को अबल समझते हो?"

"और क्या समझूँ अबल न होता तो हार कैसे जाता?"

"हार और जीत किसी और ही शक्ति के हाथ में हैं। साँगा ने यथा शक्ति वीरता के साथ सामना तो किया।"

"यदि यही बात है तो कहना सुनना व्यर्थ है। उसने दोनों की आप परीक्षा कर ली।"

"क्यों?"

"उसकी इच्छा! उसकी मौज! इन बातों को वही समझे बूझे जाने पहिचाने! ऐसी बातों पर मनुष्य अपनी सम्मति क्या प्रकट कर सकता है!"

"मैं इन बातों को नहीं मानता।"

"तुम्हारी इच्छा! भाग्य कोई वस्तु नहीं है।"

"न सही! फिर यों समझ लो कि राना की युक्ति ठीक नहीं थी। बाबर की युक्ति काम कर गई। किसी न किसी में किसी न किसी बात की कमी अवश्य रही होगी वरन् ऐसा परिणाम न होता।"

"यहाँ आकर मानना पड़ता है कि कमी थी और वह यह थी कि कई नमक हराम और नीच राजपूत बाबर से मिल गये और राना हार गया। उसमें आप कोई कमी नहीं थी।"

"इस से पता लगता है कि राना साँगा अपने सारे राजपूतों को प्रेम के बन्धन में जकड़ नहीं सका। वह हृदय से उसे नहीं चाहते थे और शत्रु से मिल गये।"

"यही बात हुई है।"

"तो फिर राना साँगा में कमी थी। बाबर में यह कमी

नहीं थी।"

"यह शब्द मैं नहीं सुनना चाहता। मेरे कान इन्हें पसन्द नहीं करते। राना साँगा साक्षात् वीरता की मूर्ति था। मरने से एक दिन पहिले उसके शरीर पर अस्सी गहरे घाव थे। फिर भी दूसरे दिन उसने मैदान से मुँह नहीं फेरा।"

"और जीत कर अपने खेमे में नहीं लौटा। यह घायल हो गया था। बाबर हट्टा कट्टा था। यह भी तो कमी ही थी।"

"मैं इस प्रकार इसे नहीं समझता।"

"फिर किस प्रकार समझते हो? मुझे भी समझाओ।"

'वह वीरता की वेदी पर बलिदान हुआ। राजपूती आन पर मर मिटा। 'मरते मरते मर गया फिर भी न छोड़ा आन को।
आके देखे कोई ऐसी राजपूती शान को।।'

'ठीक! मैं इसे सही मानता हूँ। वह अपनी आन में मर मिटा। राजपूतों की सन्तान उसे साहस और वीरता का आदर्श समझेगी। देखने के लिये वह मर गया परन्तु सच्चे अर्थ में उसने अमर पद प्राप्त कर लिया। बाबर ने उससे कम वीरता नहीं दिखलाई। न्याय की ओर भी ध्यान रखना चाहिये!"

'तुम बाबर की प्रशंसा करते हो। उसमें कौन से ऐसे गुण थे जो राना साँगा से बढ़ चढ़ कर थे? मैं भी तो उन्हें सुनूँ।'

'सुनो:—(१) बाबर अन्य देश का रहने वाला था। राना सांगा यहीं का रहने वाला था। अन्य देश से आकर इतने बड़े महाराजा को जीत लेना कोई साधारण बात नहीं है। यह पहिली बात है। (२) बाबर राना सांगा की अपेक्षा धनवान नहीं था। राना का खजाना भरपूर था। बाबर को विदेशी होने से बहुत सी कठिनाइयाँ थीं। राना साँगा में यह त्रुटि नहीं थी। यह दूसरा अन्तर था। (३) बाबर का जन्म समरक़न्द में हुआ था। वहाँ उसका राजपाट छिन गया ऐसी दुर्दशा में वहाँ से भाग निकला

जब कि उसके पास पानी पीने के लिये मिट्टी का बरतन तक नहीं था। वह काबुल में आया। अपनी बुद्धिमानी से उस देश को जीत लिया और बादशाह बना। राना सांगा की यह दशा कभी नहीं हुई। यह इन दोनों में तीसरा अन्तर था। (४) बाबर के पास फौज कम थी। राना की सेना बहुत बड़ी थी। अब तुम ही सोचो कि कौन प्रशंसा के योग्य है।'

'यह बातें सब सच हैं। मैंने भी इन्हें ऐसा ही सुन रक्खा है। परन्तु तुम नहीं जानते होगे कि वह किस तरह और किस हैसियत में यहाँ आया था। उसके पास लड़ाके शूर वीरों की अच्छी जत्था थी।'

'मैं जानता हूँ तुम क्या कहोगे! राना सांगा के शत्रुओं ने उसे काबुल से आने का निमन्त्रण दिया था। इन नमक हरामों ने राना सांगा को धोखा दिया बाबर के पास बारह हज़ार तोपची थे राना सांगा के पास इनका नाम तक नहीं था। यही कहोगे कि कुछ और?'

"हाँ! यही कहना था।"

"तो इस में दोष किसका था। बाबर का या साँगा का? उसे अपने आपको सँभलना चाहिये था। उसने ऐसा नहीं किया और इसलिये हार गया।"

"परन्तु इससे राना के साहस और वीरता पर कोई आक्षेप नहीं किया जा सकता।"

"नहीं! राना बाबर से कम साहसी और पुरुषार्थी नहीं वह सचमुच बाँका सूरमा था। इससे न किसी को इन्कार है और न हो सकता है। उसकी प्रशंसा जितनी की जाय वह उचित है।"

"इस विषय में तो हमारी तुम्हारी सम्मति मिल रही है।"

"मैं न्याय का शत्रु नहीं हूँ। जो सच्ची बात है उसे कैसे न मानूँ।"

"परन्तु बाबर धनहीन और अन्य देश का होता हुआ भी

जीत गया और राना साँगा बलवान होता हुआ भी लड़ाई के मैदान में काम आया। यह फिर भी सोचने समझने का विषय है।"

"बहुत ठीक! बाबर बलवान नहीं था। लड़ने के लिये तो वह आ गया परन्तु राना के सामने आकर वह सोच विचार में पड़ गया। उसने सुलह के लिये भी पत्र लिखा था परन्तु राना ने सुलह करने में अपना अपमान समझा। दोनों फ़ौजें बहुत दिनों तक आमने सामने पड़ी थीं। किसी को आगे बढ़ने का साहस नहीं होता था। यह दशा कब तक रहती! शराब बहुत पिया करता था। उसने सारी मुसलमानी फ़ौज के सामने क़सम खाई कि यदि मालिक ने उसे लड़ाई में विजय प्रदान की तो वह फिर कभी शराब को हाथ तक न लगायेगा। उसके पास जितने सोने चाँदी के मटके और प्याले इत्यादि थे, उसने सब कंगालों और फ़कीरों को बाँट दिये। शराब पीनी मुसलमानों में हराम है। बहुत से लोग तो सदैव से पीते ही चले आरहे हैं। बाबर की इस प्रतिज्ञा ने उसके साथियों में नई रूह फूँक दी। उसका साहस और उत्साह बढ़ गया। वह लड़ाई के लिये आगे बढ़े। बात ही तो थी। जिसने सिपाहियों के दिल को बढ़ा दिया। वह हथेली पर जान रख कर लड़े। बाबर के तोपचियों ने बहुत काम किया। और अन्तिम परिणाम तुम आप जानते हो।"

"क्या राजपूतों ने साहस से काम नहीं लिया?,

"लिया तो सही परन्तु मुट्ठी भर तोपचियों के सामने दाल न गल सकी। राना की फ़ौज में कुछ नमकहराम लोग थे। यह न होते तो सम्भव था कि बाबर लड़ाई में हार जाता।"

"फिर तो बड़ा अच्छा होता और विदेशियों का पाँव यहाँ न जमने पाता।"

"मैं इस बात को इस तरह नहीं मानता।"

"क्यों?"

क्योंकि हिन्दू हज़ारों वर्ष से बिगड़ते चले आ रहे हैं। उनमें जातीय एकता का नाम तक नहीं है। जाति पाँति और छूत छात के बुरे रिवाज ने उन्हें बिखेर रक्खा था! ईश्वर की इच्छा थी कि यह लोग अपनी भूल के लिये दंड भोगें। इन्होंने नीची जाति वालों को बुरी तरह से दबाकर दबोच रक्खा था। अन्य देश वाले आये और इनकी नकेल अपने हाथ में ली। तुम जानते हो इन पर राज्य करने के लिये पहिले गुलाम ही खानदान के बादशाह हुये। इनमें से पहिला कुतुबुद्दीन ऐबक था। इस खानदान का अन्तिम बादशाह मुइज़्ज़ुद्दीन कैक़बाद हुआ है। यह हिन्दू शूद्रों से घृणा करते थे और गुलाम ही इनके हाकिम बनाये गये। इनके पीछे तुग़लकों, सैयदों और लोदियों ने बादशाहत की। लोदियों में इबराहीम लोदी दिल्ली का अन्तिम बादशाह हुआ है जिससे बाबर ने गद्दी छीन ली वह दिल्ली का बादशाह तो हो चुका था। अन्य देश वालों का पाँव यहाँ जम चुका था। वह हारता या न हारता यह दूसरी बात थी। इसके अतिरिक्त राना साँगा की इच्छा दिल्ली लेने की नहीं थी। बाबर उसे अपने आधीन रखना चाहता था। यह उसे पसन्द नहीं था और लड़ाई का मुख्य कारण हुआ। राजपूतों ने बाबर को काबुल से नहीं बुलाया था किन्तु इबराहीम लोदी के शत्रु उसे यहाँ लाये थे। तुम्हारा यह विचार ठीक नहीं है।"

"तुमने इन बातों को अच्छी छान बीन की है।"

"क्यों नहीं! अपने देश के इतिहास को न जानना जातीय अपराध और महा पाप है।"

"जो कुछ हो बाबर मरेगा।"

"कौन मारेगा?"

"मैं मारूँगा। अपने हाथ से उसका सर धड़ से अलग करके राना साँगा का बदला लूँगा।"

दूसरा अध्याय

बलराम और पतराम

बलराम और पतराम दोनों मित्र थे और यह बात चीत इन्हीं दोनों में हुई थी। बलराम राना सांगा को देश और जाति का सिरताज समझता था। बाबर के साथ उसके लड़ाई में मारे जाने से इसे बड़ा दुख था। वह चाहता था कि राना सांगा के साथ वह भी मारा जाता परन्तु ऐसा नहीं हुआ। अभय होने के कारण वह जिधर झुकता था अपनी तलवार की काट से परे के परे उड़ा देता था। यहां तक कि वह हथेली पर जान रख कर तोपचियों पर भी एक दम टूट पड़ा। उनमें कई को तलवार की घाट उतारा परन्तु उस पर किसी का दांवँ न चला। यह सांगा का विश्वास पात्र सेवक था। और केवल लड़ने भिड़ने के लिये इसने फौज में नौकरी भी की थी। घर का अच्छा जमींदार था अवस्था बहुत नहीं थी परन्तु जब से राना का नौकर हुआ अपनी वीरता और निर्भयता से उसकी आँखों में खुब गया! राना उसे अपना बाडी-गार्ड समझने लगा था। जिस दिन राना के शरीर पर अस्सी घाव लगे थे। और घोड़े पर बैठने के अयोग्य हो गया था। इसी ने उसे सँभाल रक्खा था वरन् सम्भव था कि उसी दिन मारा जाता। लड़ाई समाप्त होने पर सन्ध्या के समय वह राना को खेमे में लाया अपने हाथ से टाँके लगाये और मरहम पट्टी की। राजस्थान में राना साँगा अपने ढंग का अद्वतीय सूरमा राजा हो गया है। उसकी एक आँख तीर की चोट से पहिले ही जाती रही थी। बाबर के साथ लड़ाई में उसका एक पाँवँ और एक हाथ दोनों ही लगभग बेकाम हो गये थे दवा इलाज का इतना समय कहां था! सम्भव था कि वह अन्तिम दिन की लड़ाई में न जाता परन्तु उसके साहस ने आज्ञा नहीं दी कि वह मैदान से

मुँह मोड़े। बलराम दूसरे दिन उसे घोड़े पर बिठाकर लाया। चाहता तो वह यह था कि वह बराबर राना के साथ रहे परन्तु मारता काटता जो वह आगे बढ़ा तो बढ़ता ही चला गया। सन्ध्या समय राना की मृत्यु ने लड़ाई को समाप्त कर दिया। राजपूतों के साहस का पांवँ उखड़ गया और खेत बाबर के हाथ में रहा। बलराम लड़ते लड़ते थक गया। राना की मृत्यु के समाचार ने उसे पागल बना दिया। वह उसकी लाश पर आया। शरीर ठण्डा हो गया था और अन्तिम समय वह अपने सरदार की सेवा में न रह सका। उसके दुख का अनुभव कौन कर सकता है! सर पर दुस्सह दुःख का पहाड़ टूट पड़ा परन्तु राजपूतों का दिल विचित्र बनाया गया है। उसने ढारस के साथ दिल में ठान लिया कि बाबर से राना साँगा का बदला लिया जाय। यह भाव महीनों उसके दिल में उमँड़ता रहा।

उसने अपनी इस इच्छा को किसी पर प्रकट नहीं किया था क्योंकि बाबर का राज्य प्रबन्ध बड़ी चौकसी के साथ था। उसके जासूस हर जगह भेष बदले हुये रहा करते थे। क्या मजाल कि कहीं कोई बात हो और वह बाबर के कानों तक न पहुँचाई जाय!

बलराम और पतराम बचपन के मित्र थे। एक दिन बलराम के मुँह से निकल गया—"बाबर मरेगा।" और दोनों में फिर जो बातचीत हुई वह पहिले अध्याय में हमारे पाठक पढ़ चुके हैं।

पतराम ने कहा—"बाबर मरेगा।"

बलराम बोला—'बाबर मरेगा।"

पतराम—"असम्भव प्रतीत हो रहा है।"

बलराम—"जब साँगा जैसे बाँके राजपूत की मृत्यु की सम्भावना है तो बाबर की मृत्यु की भी सम्भावना हो सकती है। सात महीना पहले कौन कह सकता था कि काबुल से एक मनचला मुग़ल आकर हिन्दुस्तान का बादशाह बनेगा और साँगा जैसे योधा को पद्दलित कर दिखायेगा! इससे पता लगता है कि संसार में कोई बात असम्भव नहीं है।"

पतराम—"यह तो ठीक है कि कभी २ असम्भव बातें भी सम्भव होती हुई दिखाई देती हैं। साहसी और मनचला मनुष्य सब कुछ कर सकता है। परन्तु तुम्हारी इच्छा के पूर्ण होने का कोई सामान दिखाई नहीं देता। बाबर बहुत चौकन्ना रहता है। उसमें अहंकार भी नहीं है। वह फूँक फूँक कर पाँव रखता है। उसके चारों ओर विश्वास पात्र मनुष्यों का पहरा रहता है। उसके पास पहुँचना खेल नहीं है। तुम अकेले हो। अपने भाव को किसी पर प्रकट तक नहीं कर सकते। कैसे सम्भव है कि एक अकेला मनुष्य इतना कठिन काम कर सके।"

बलराम—'अभी तुम ने बताया है कि बाबर समरक़न्द से कंगाल होकर निकला। उसके पास पानी पीने के लिये मिट्टी का लोटा तक नहीं था और आज दिल्ली के राज सिंहासन पर विराजमान है जो सदैव से चन्द्रवंशी राजाओं की राजधानी थी। जब वह सम्भव है तो यह क्यों नहीं हो सकता! साहस और उत्साह से सब कुछ हो जाता है। मनुष्य की संकल्प शक्ति दृढ़ होनी चाहिये। फिर वह सब कुछ कर सकता है। वह ब्रह्माण्ड की

सारी शक्तियों का भण्डार भी है । जिधर झुकेगा अपना काम पूरा कर दिखायेगा ।

पतराम हँसा—"ऐसी दशा में इस समझ बूझ के साथ क्या मनुष्य का काम यह होना चाहिये कि किसी निर्दोष मनुष्य की जान के पीछे पड़ जाय! तुम इसे अच्छा समझो। मैं तो अच्छा नहीं समझता ।"

बलराम—"तुम बाबर को निर्दोष समझते हो ?"

पतराम—"और क्या समझूँ ! राजपूत लड़ा भिड़ा करते हैं। दो लड़ने वाले लड़े । जो बलवान था जीत गया। जो अबल था हार गया। इसके अतिरिक्त और कोई बात नहीं है । इस पर भी बाबर सुलह के लिये कहता सुनता रहा। राना साँगा ने सुलह करली होती तो यह दिन न देखना पड़ता । इसने नहीं सुनी। उसने जान पर खेल कर सामना किया और मैदान मार लिया। मैं बाबर को निर्दोष न कहूँ तो क्या कहूँ !"

बलराम—"तुम्हारी फ़िलासफ़ी निराली है। यह बातें साधु के मुँह से अच्छी लगती हैं। क्षत्री ऐसा नहीं कह सकता सम्भव कैसे था कि राना बाबर की शर्त मानकर उसके साथ सुलह कर लेता ! वह किसी की पराधीनता कब पसन्द करने लगा था । यही तो उसका प्रशंसनीय स्वभाव था जिस पर मैं न्योछावर होता हूँ "

पतराम—"यह सब सच है परन्तु यदि राना चाहता तो वह बाबर का और बाबर उसका मित्र हो जाता। इसमें तो राना का अपमान नहीं था। उसने तो सुलह के नाम से मुँह फेर लिया, व्यर्थ में अपनी जान दी और बरबादी के मुँह में चला गया।"

बलराम—"मैं ऐसा नहीं कहता।"

पतराम—"बरबादी नहीं तो है क्या ! कई बार देख लिया गया। चित्तौड़ दिल्ली से कभी न जीत सका । अलाउद्दीन ने

रतनसी के साथ जो व्यवहार किया वह बच्चे बच्चे को याद है। उससे लाभ उठाकर अनुभव से काम लेना चाहता था। इस बार फिर चित्तौड़ पर बला आई और हमारा सरदार हम से छीना गया। इस लड़ाई से चित्तौड़ को क्या लाभ पहुँचा सुलह कर ली गई होती तो क्या अच्छा होता।"

बलराम—"क्या राजपूतों से जातीय गौरव की दौलत छिन गई जो तुम ऐसी बहकी २ बातें कर रहे हो! यदि हमीर और रतन सी अपने गौरव के रखने के लिये मर मिटे तो अच्छा हुआ—जौहर किया, साके किये, मर मिटे, बरबाद हो गये। इसे बुरा कौन कहेगा! करना और होना भी ऐसा ही चाहिये था।"

पतराम—'तुम जल्दबाज़ हो। जल्दी करते हो। जल्दी में बहक जाते हो। मान मर्य्यादा के लिये राजपूत कटकट कर मरे और मर मिटे। अच्छा किया। अपनी लाज रख ली परन्तु राना सांगा के विषय में तो वह बात नहीं थी। सुलह कर लेने से उसका क्या बिगड़ता था। मेरे कहने का आशय केवल इतना ही है।'

बलराम—'राना सांगा ने मेरी समझ में जो किया अच्छा ही किया। मैं उसके काम में कोई दोष नहीं पाता।'

पतराम—'तो फिर तुम क्यों कहते हो कि बाबर मरेगा। राजनीति के अनुसार वह निर्दोष है।'

बलराम—'तुम मेरे विचार को अबल करना चाहते हो।'

पतराम—'राम! राम! ऐसा मत समझो। मैं न्याय को सामने रखकर तुमको सोचने समझने का अवसर दे रहा हूं। जिससे तुम में पुष्टि आ जाय। इसके अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं कर रहा हूं।

बलराम—'तो क्या मैं अपने विचार छोड़ दूँ?'

पतराम—'मैंने ऐसे शब्दों में अपना फैसला नहीं सुनाया

बलराम—'तुम्हारी नीयत क्या है।'

पतराम—मेरी अपनी नीयत कोई नहीं है। तुम स्पष्ट शब्दों में बताओ कि बाबर के मारने का विचार तुमको किस नीयत से हुआ है ?'

बलराम—'केवल बदला लेने की दृष्टि से। राना सांगा को बाबर ने मारा। वह मेरा सरदार और राजा था। जैसे साँगा मारा गया वैसे ही मैं भी उसे अपनी कटार से मारना चाहता हूं। इसके अतिरिक्त और कोई बात नहीं है। लड़ाई प्रेम और बदला लेने में उचित अनुचित बातों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता मैं राजपूत हूँ। अपने सरदार का बदला लेना चाहता हूं। अब समझे कि अब भी नहीं समझे ?'

पतराम—'समझा और बहुत अच्छी तरह से समझा कोई बात तो हुई।'

बलराम—'फिर बताओ तुम मेरा साथ इस में दोगे या नहीं ?'

पतराम ने दिल में सोचकर पूछा—'यह बात तुम क्यों पूछते हो ? मैं तो सदैव से तुम्हारा मित्र और साथी रहा हूँ।'

बलराम—'बस इसी के जानने की आवश्यकता थी।'

पतराम—'और यदि मैं तुम्हारे साथ देने से इनकार करता तो तुम क्या करते ?'

बलराम हँसा—'यही कटार तुम्हारे कलेजे में भोंक देता क्योंकि तुम नीयत जान गये थे। मैं इस विषय को किसी से कहना सुनना नहीं चाहता। मुझे विश्वास था कि तुम मेरे साथ रहोगे इसलिये दिल की बात तुमसे कही थीं। मालिक को धन्यवाद है कि तुमने साथ देना स्वीकार कर लिया।'

तीसरा अध्याय

भविष्य वाणी

दोनों मित्र थोड़ी देर तक चुप थे।

पतराम ने कहा—'बुरा हो या भला सफलता हो या असफलता चाहे कुछ ही परिणाम हो मैं हर हाल में तुम्हारा साथी हूँ।'

बलराम—'मुझे इसका पहिले ही से विश्वास है।'

पतराम—'यहां से थोड़ी दूर पर एक मुसल्लमान फ़क़ीर भी रहा करता है। यदि तुम कहो तो मैं उससे चल कर पूछूँगा कि हमारा काम सिद्ध होगा या नहीं?'

बलराम हँसा—"यह भोलेपन की बात है या तो तुम साधू और ज्ञानी की तरह बातें करते थे या अब नादानी पर उतर आये।"

पतराम—"मैं उससे इतना ही पूछूँगा कि हमारा कार्य्य सिद्ध होगा या नहीं?"

बलराम—"मैं समझता हूँ तुम यह कहने नहीं जा रहे हो कि बाबर हमारे हाथों से मारा जायगा या नहीं। फिर भी यह नादानी की बात चीत है। इन मुसलमान फ़क़ीरों के अन्दर बाबर के जासूस अधिकता के साथ छुपे रहते हैं इनसे दूर रहने ही में भलाई है और मैं तो इस पूछा पेखी को भी नहीं मानता।"

पतराम—"परन्तु इस में हर्ज ही क्या है? राजस्थान में सदैव से यह दस्तूर चला आता है कि लोग नजूमी और ज्योतिषी से पूछकर काम करते हैं। मैंने सुना है यह फ़क़ीर रमल और जफ़र भी जानता है। ठट के ठट मनुष्य उसे बराबर घेरे रहते हैं।"

बलराम—"और यदि उसने कह दिया कि काम न बनेगा तब की कहो, क्या अपने विचार को छोड़ दोगे ?"

पतराम—"नहीं ! यह दिल बहलाव होगा। केवल यह देखना है कि वह कहता क्या है !"

बलराम—"यही तो नादानी की बात है। फिर भी मैं तुम्हारे दिल बहलाव में रुकावट नहीं डालता।जो कुछ हो हँसते खेलते हो। मारे चाहे मरें ! हँसी खुशी की मौत हो परन्तु उसे यह पता न लगने पाये कि हमारा विचार क्या है !"

पतराम—"अच्छा ! फिर कल चलो। देखें तो सही यह रम्माल क्या कहता है !"

दूसरे दिन यह रामकोट में पहुँचे जहाँ नईउमद्दीन नाम का फ़क़ीर रहता था। यह कौन था इसे कोई नहीं जानता था। कहाँ से आया था इसका भी किसी को पता नहीं था। देखने में साधारण मनुष्य जान पड़ता था। रूप रंग का अच्छा था—गोरा रंग बड़ी बड़ी आँखें, चौड़ी पेशानी, बहुत ही मिलनसार। लोगों का विचार था कि वह अच्छे फ़क़ीरों में से था। भिक्षा नहीं माँगता था। रमल और जफ़र से उसकी रोटी चलती थी। कहीं आता जाता भी नहीं था। बहुत ही उदासीन वृत्ति का मनुष्य था। हिन्दू मुसलमान सब उसके श्रद्धालु बन गये थे। दोपहर के समय उसका झोंपड़ा प्रश्न करने वालों के लिए खुलता था। और समय वह किसी से मिलता जुलता नहीं था। मिलनसार होने के कारण बहुत से लोग उससे मिला करते थे। सब लोग उसके स्वभाव को जान गये थे। इसलिये दोपहर को उसके पास अच्छी भीड़ लग जाती थी। प्रश्न करने वालों की सूरत देख करके वह उनके भाव को भाँप जाता था और उसी के अनुसार उन्हें उत्तर दिया करता था। यदि कोई टेढ़ी बात होती थी तो रमल या ज़फ़र की सहायता से काम लेकर लोगों को सन्तोषजनक उत्तर दे देता था।

फ़क़ीर को इन से क्या सम्बन्ध है। इस बात का उत्तर कोई क्या दे! कौन जाने इस विद्या से उसने क्यों सम्बन्ध रख छोड़ा था! परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि लोग उसे अच्छी दृष्टि से देखा करते थे। जो उससे मिलता था प्रसन्न हो जाता था।

बलराम और पतराम दोनों दोपहर से कुछ पहले पहुंचे। झोंपड़ा बन्द था। इन्होंने पुकारा। उत्तर नहीं मिला। झोंपड़े के ऊपर शेर की खाल पड़ी थी। पतराम ने चाहा कि उसे उतार कर पिछावे और उसी पर दोनों बैठ जायँ परन्तु यह खाल झोंपड़े के साथ कस कर बँधी हुई थी। खुल नहीं सकी इन्होंने विशेष ध्यान भी नहीं दिया। फिर पृथ्वी पर बैठ गये। और द्वार खुलने की राह देखने लगे।

ठीक दोपहर के समय उसने झोंपड़े की टट्टी खोली यह दोनों बैठे ही रहे।

नईमुद्दीन ने इन्हें देख कर पूछा—"तुम" कैसे आये?

पतराम—'हम कोई काम करना चाहते हैं। आपसे यह पूछना है कि हमें सफलता प्राप्त होगी या नहीं!'

फ़क़ीर—'तुम्हारे काम का सम्बन्ध किस दिशा से है?

पतराम—"उत्तर की ओर है।"

फ़क़ीर—"लेने के देने पड़ेंगे। लाभ कुछ न होगा गुम नाम रहना पड़ेगा। इष्ट मित्र और सम्बन्धी सदैव के लिये छूट जायँगे। देश में लौटकर आने का अवसर न मिलेगा।"

पतराम—"क्यों?"

फ़क़ीर—"क्यों क्या उत्तर दिया जाय। लक्षण ऐसे ही हैं। इससे अधिक मैं कुछ नहीं कह सकता।"

पतराम—"आपने यों ही उत्तर दे दिया। जफ़र या रमल से काम नहीं लिया।"

फ़क़ीर—"उनकी इस समय आवश्यकता नहीं है औ

बिना आवश्यकता के न मैं कुरा डालता हूँ न रमल का हिसाब निकालता हूं।"

पतराम—"हम तो बड़ी आशा लेकर आपके पास आये थे।

फ़क़ीर— मैंने तुमको निराश तो नहीं किया ! जो प्रश्न तुमने किया उसका उत्तर दे दिया गया इससे अधिक और क्या चाहते हो ?"

पतराम—"आपका नाम बहुत दूर दूर तक फैला हुआ है और आप भूत भविष्य और वर्तमान तीनों काल के ज्ञाता समझे जाते हैं।"

फ़क़ीर—"मनुष्य कभी त्रिकालज्ञ नहीं हो सकता यह बात केवल ईश्वर के विषय में कही जा सकती है।"

पतराम—"परन्तु हम हिन्दुओं का विश्वास है कि सृष्टि में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम है। मुसलमान भी उसे अशरफुल मख़लूक़ात कहते हैं।"

फ़क़ीर ने पतराम को गहरी दृष्टि से देखकर कहा—"मनुष्य मनुष्य में भेद होता है। मनुष्य के भेष में जिन्हें तुम देख रहे हो वह सब के सब मनुष्य नहीं हैं। सम्भव है वह आगे चल कर मनुष्य बनें। उस समय वह सर्वश्रेष्ठ कहे और समझे जा सकते हैं।"

पतराम—"तो इस बात से कम से कम इतना तो सिद्ध हुआ कि वह सर्वश्रेष्ठ है या हो सकेगा अथवा हो सकता है।"

फ़क़ीर—"फिर भी वह ईश्वर का बनाया हुआ है। उसे ईश्वर तो नहीं कह सकते। ईश्वर ईश्वर है। मनुष्य मनुष्य है। दोनों में आकाश पाताल का भेद है।"

पतराम—"मैं तो इसी मनुष्य ही को ईश्वर समझ बैठा हूँ। जीव और ब्रह्म में कोई भेद नहीं है।"

फ़क़ीर—"भेद तो है। भेद न होता तो तुम ऐसी बात

चीत क्यों करते ! यह भेद ही है जो तुम्हारे मुँह से शब्द रूप में प्रगट हो रहा है। इस वाद विवाद से लाभ क्या है ! यह फिलास्फरों की बातें हैं। तुम अपने मतलब की बात कहो। मेरे पास जिस काम से आये हो केवल उसी का ध्यान रहे नहीं तो खो जाओगे।"

पतराम—"जब सारी बातों का सम्बन्ध ईश्वर से है तो फिर ज्योतिष रमल और ज़फ़र की क्या आवश्यकता है ?"

फ़क़ीर—'आवश्यकता तो है। सृष्टि में कोई वस्तु अनावश्यक नहीं है परन्तु मनुष्य को यह समझ रखना चाहिये कि ईश्वर की बातें ईश्वर ही जाने। हाँ ! यह विद्यायें मनुष्य के अपने अनुभव की बातें हैं और वह सैकड़ों क्या हज़ारों वर्ष से इनसे लाभ उठाता चला आरहा है। इसलिये उसका सिलसिला जारी है !"

पतराम—"आपने कैसे समझा कि हमारा कार्य सिद्ध नहीं होगा ?"

फ़क़ीर—'अनुभव से जाना। तुमने आते ही शेर की खाल बैठने के लिये खींची। वह नहीं निकली। यह असफलता का लक्षण है। इससे मैंने जाना कि लेने के देने पड़ेंगे। तुम खाल पर न बैठ सके। पृथ्वी पर बैठना पड़ा। तुम मेरे पास ख़ाली हाथ आये फ़क़ीर बादशाह और सम्बन्धियों के पास ख़ाली हाथ जाने से प्रेम नहीं उत्पन्न होता और न कोई लाभ होता है। इसलिए मैंने ऐसा अनुमान किया। तुम पृथ्वी पर बैठे। इससे मैंने यह सोचा कि यदि यह काम किया तो देश छूट जायेगा। जिसे पृथ्वी खींचकर अपने में मिला लेती है वह इष्ट मित्रों से सदैव के लिए छूट जाता है। फिर इस जीवन में उसे उनका मुँह देखना नसीब नहीं होता।'

पतराम—'यह आपका अनुमान है।'

फ़क़ीर—'अनुमान भी एक प्रकार की विद्या है जिसका सम्बन्ध

मन और इन्द्रियों से है।'

पतराम--'अनुमान झूट भी हो सकता है।'

फ़क़ीर--'यदि अनुभव ठीक नहीं है तो परिणाम भी वैसा ही होगा और यदि यह ठीक है तो परिणाम को भी ठीक ही होना चाहिये। दो और दो मिल कर चार ही होते हैं। बरसात के पानी से नदी नालों के बहने का अनुमान किया जाता है। कुआँ को देख कर आग का पता लगता है।'

पतराम—'नहर से पानी निकालने पर नदी नाले बह निकलते हैं। भाप धुयें की सूरत का होता है।'

फ़क़ीर—'भ्रम की सम्भावना तो होती है। भूल चूक होने का डर रहता है परन्तु यह मैंने पहिले ही कह दिया है कि यदि ठीक नहीं है तो नतीजा भी वैसा ही होगा तुम अपने अनुमान मतलब की बात कहो व्यर्थ बातों में क्यों उलझते हो ?'

परतराम—"मेरी इच्छा है कि आप किसी और युक्ति से मुझे विश्वास करा दें कि आपका अनुमान ठीक है।'

फ़क़ीर—'बहुत अच्छा ! यह भी हो जायगा।' फ़क़ीर ने नीचे का नक़शा खींचा।

१	२	३	४
५	६	७	८

और पतराम से कहा—'किसी अंक पर उँगली रक्खो।' पतराम ने चार के अंक पर उँगली रख दी।

फ़क़ीर ने कहा—'तुमने बुरे खाने पर उँगली रक्खी। काम न बनेगा। उलटा लेने के देने होंगे।'

पतराम—'इसका प्रमाण ?'

फ़क़ीर—'इन खानों के लिये फ़ारसी शेर कहे गए हैं जो रम्मालों के बहुत दिनों के अनुभव का निचोड़ है। वह यह हैं:—

यके नेको दो बद बाशद, सेह अज़ मेहनत बरायद कार।
चहारम नहस पंजुम साद, शेशुम नेको वले दुशवार॥
ब हफ़्तुम काम दिलयाबी, मुरादे दिल शवद हासिल।
ब हश्तुम हम बरायद कार, बाद अज़ मुद्दते बिसियार॥

इसका अर्थ यह है कि एक का अंक अच्छा दूसरा बुरा, तीसरा परिश्रम कराने वाला चौथा मनहूस, पाँचवां शुभ, छटा कठिनाई से सिद्ध होने वाला, सांतवां झटपट काम बनाने वाला है। आठवें से भी काम निकल सकेगा परन्तु समय बहुत लगेगा।

पतराम—'चुटकुले हैं।'

फ़क़ीर—'हाँ बाबा! यह चुटकुले हैं और मेरे जैसे फ़क़ीर इन्हीं चुटकुलों से काम लेते हैं।'

बलराम अब तक चुपचाप इन दोनों की बातें सुन रहा था। पतराम के चुप हो जाने पर वह बोला—'क्या मैं भी इस नक़शे के किसी खाने पर उँगली रख सकता हूँ?'

फ़क़ीर—क्यों, नहीं परन्तु आंखों को बन्द करके उँगली रक्खो।'

बलराम ने आँख बन्द करके उँगली रक्खी। वह दो के खाने पर पड़ी। फ़क़ीर ने कहा—'यह अंक अशुभ और बुरा है तुम्हारा काम सिद्ध नहीं हो सकता।''

इसके पश्चात् बहुत बात चीत नहीं हुई। दोनों मित्र उठे और फ़क़ीर से विदा होकर अपने घरों को लौट आये।

चौथा अध्याय

मोती बाई या कमलावती

कमलावती बलराम की स्त्री थी। अवस्था बहुत ही कम थी। बलराम भी बीस वर्ष का था। कमलावती पन्द्रह साल से कम ही की थी परन्तु समझ बूझ वाली लड़की थी। स्त्री पुरुष एक दूसरे से सच्चा प्रेम रखते थे। कमलावती को इस बात का अहंकार था कि इसका पति शूर वीर और सच्चा राजपूत है। क्या राजपूतनी ऐसी होगी जो योधा पति से ब्याहे जाने की इच्छा न रखती होगी! जब से बलराम साँगा का विश्वासपात्र बना यह अपने आपे में फूली नहीं समाती थी और जब अपने पति की प्रशंसा सुनती थी मग्न हो जाती थी। राना साँगा की मृत्यु ने सारे राजस्थान को दुखी कर दिया था। बलराम की जो दशा थी उसे हमारे पाठक पढ़ चुके हैं। कमलावती कम दुखी नहीं थी। स्त्री पुरुष जब एकान्त में मिलते यही बातचीत होती रहती थी।

कमलावती और बलराम में प्रेम तो था परन्तु उसने अपनी स्त्री से भेद की बात कभी नहीं कही। भारतवर्ष की यह प्रसिद्ध कहावत है कि भेद की बात स्त्री से कभी न कही जाये उन्हें भाँड़ा फोड़ते देर नहीं लगती। बलराम ऐसा ही करता था परन्तु बच्चों और स्त्रियों में अनुभव शक्ति बहुत बढ़ी चढ़ी होती है। चाहे कोई बात इनसे स्पष्ट न कही जाय परन्तु यह उसे भाँप ही जाते हैं।

जब बलराम नईमउद्दीन के यहाँ से आया उसके हृदय सागर में नाना प्रकार के विचारों की लहरें उमड़ रही थीं। अकेला पतराम ही उसके भेद को जानता था परन्तु कमलावती भी उन्हें अपने में भाँप रही थी। वह छेड़ छाड़ को बुरा समझ कर उसकी इच्छानुसार चुप रहती थी। बलराम एक दिन बहुत ही उदास और दुखी था। कमलावती ने अब चुप रहना उचित नहीं समझा पूछा—"तुम क्यों चिन्ता कर रहे हो?"

बलराम—"तू जान कर क्या करेगी ?"

कमलावती—"आत्मा का साथी है और शरीर आत्मा का संगी है। मैं तुम्हारे दुख दर्द की साथी रहूँगी।"

बलराम—"इससे लाभ क्या होगा ?"

कमलावती—'जो लाभ शरीर को आत्मा के मेल से होता है।"

बलराम—कौन किसका साथी हुआ है। यह सब कहने सुनने की बातें हैं।

कमलावती—"जो कुछ संसार में है वह बात ही तो है। बात न हो तो कुछ भी न हो।"

बलराम—"तू बात करना चाहती है।"

कमलावती—"मैं बात की तह में पहुँचकर सोच समझ के साथ तुम्हारी चिन्ता का इलाज करूँगी।"

बलराम—"तू वैद्य और हकीम तो नहीं है।"

कमलावती—"मैं तुम्हारी हकीम ही हूँ। तुम्हें पता नहीं है।"

बलराम या तो दुख में था या हँस पड़ा—तू और मेरे रोग का इलाज करे ! मुझे इसकी समझ नहीं।"

कमलावती—"मुझ से कहो। देखो अभी इलाज बताती हूं या नहीं !

बलराम—"तू स्त्री है मैं पुरुष हूँ। मेरी और तेरी हैसियत में भेद है।"

कमलावती—"यह हैसियत एक दूसरे की दृष्टि है।"

बलराम—"कैसे और किस प्रकार ?"

कमलावती—आत्मा और शरीर दो तत्व हैं। आत्मा शरीर के बिना अपने आपको प्रकट नहीं कर सकता और शरीर बिना जीवित नहीं रह सकता। सम्बन्ध आत्मा और शरीर में है वही सम्बन्ध पुरुष और स्त्री में है। दोनों मिल जुल कर गृहस्थाश्रम का धर्म पालन करते रहें।"

बलराम—"थोड़ी सी तू अवस्था ! और शरीर आत्मा और

के सम्बन्ध को समझती है ! यह बुद्धि विवेक तुझे किसने दी ?'

कमलावती—तुम्हारे सम्बन्ध ने, आत्मा यदि शरीर से अलग होता तो दोनों ही बेकार थे। दोनों मिले तो काम के बने। संसार में स्त्री पुरुष की यही हैसियत है !"

बलराम—"तू सच कहती होगी। मुझे इन बातों की समझ नहीं है।"

कमलावती—"तो मुझसे पूछो। मैं समझा दूँ।"

बलराम—"मैं तुझ से नहीं कहना चाहता।"

कमलावती—"न कहो तुमको अधिकार है परन्तु मुझे उसका कुछ कुछ पता है।

बलराम—"कैसे ?"

कमलावती—"दाई से पेट किसने छुपाया है। रात दिन का साथ और तुम्हारे विचार को न जानूँ। यह सम्भव कैसे है"

बलराम—"अच्छा बता तो सही इस समय कौन सा विचार मुझे बुरी तरह से सता रहा है ?"

कमलावती—"राना साँगा की मौत की याद और बाबर से बदला लेने का विचार। कहो सच है या झूठ !"

बलराम चकित हुआ—"बात तू सच कहती है। यह तेरा अनुमान ही अनुमान है !"

कमलावती—'अनुमान कोई साधारण वस्तु तो नहीं है।' इसी पर ख्याल की जड़ स्थिर है। संसार ख्याल का उत्पन्न करने वाला है।

बलराम—'भाँपने को तो तू भांप गई फिर और मुझे क्या कहती है ?'

कमलावती—'शान्ति से काम लो। जहाँ मनुष्य का वश नहीं चलता वहां मालिक की मौज ही पर रहने में भलाई है।'

बलराम—'क्यों ?'

कमलावती—इसलिए कि राना सांगा का बाबर के हाथ से मारा जाना उसके भाग्य में लिखा था। ऐसा होने वाला ही था और वह हुआ। यह किसी के रोके भी नहीं रुक सकता था। यहां तक कि यदि राना जी आप रोकना चाहते तो उनके वश की बात नहीं थी। भावी बलवान है। उसने आंखों पर पट्टी चढ़ा दी और वह भ्रम में पड़ कर उसी दशा को पहुँचे जो उन्हें प्राप्त होने वाली थी।'

बलराम—'तेरी समझ में बाबर निर्दोष है ?'

कमलावती—'इसमें सन्देह ही क्या है ?' वह आप किसी महान् शक्ति का भेजा हुआ आया था।'

बलराम—'और राना सांगा को मरना था।'

कमलावती—'इसीलिये वह मर गया।'

बलराम—जिसे देखिये वह यही राग अलापता है। कम से कम मेरी स्त्री को ऐसा न कहना चाहिए था क्योंकि मेरा विचार उसके विरुद्ध है !'

कमलावती—'यदि तुम्हारे अन्दर यह भाव न होता तो मेरे मुँह से ऐसा कभी न निकलता। मैं तो तुम्हारी छाया हूँ।

बलराम—'यदि यह विचार ठीक है तो मनुष्य अपना भाग्य साथ लेकर संसार में आता है और उसके सारे काम इसी भाग्य के अनुसार होते हैं। फिर कर्म धर्म साहस उत्साह यह सब के सब व्यर्थ और निरर्थक हैं।'

कमलावती—"भाग्य में यह सभी आ जाते हैं। जो जैसा है वैसा ही करेगा।

परन्तु मैं देखता हूँ कि थोड़ा सा अवसर मिलने से नीचे गिरा हुआ मनुष्य एक दम चोटी पर चढ़ जाता है। कंगाल धनवान बन जाता है। धनवान टुकड़ों का मुहताज हो जाता है। यह सब परिवर्तन दम के दम में हो जाता है।'

कमलावती—'यह सब भी भाग्य ही के खेल हैं वरन् ज्योतिषी आगे की बातें कैसे बता सकता है। संसार यों ही नहीं है किन्तु किसी महान शक्ति ने पहिले ही से समझ बूझ कर उसका प्रबन्ध कर रक्खा है।'

बलराम—'यदि मैं किसी को मार डालूँ तो उसके भाग्य में मारा जाना और मेरे भाग्य में उसका मारना लिखा हुआ था।'

कमलावती—'बात तो कुछ ऐसी ही जान पड़ती है।'

बलराम—'तब तो कोई बात न ठहरी।'

कमलावती—'जो ठहरी हुई है वही ठहरती है। हाँ तुम्हारे कानों को वह बुरी लगती है। यह भी भाग्य का लिखा हुआ है वरन् साधु सन्त और महात्मा को इसीसे शान्ति मिलती है। उनका भाग्य वैसा ही है। वह कहा करते हैं:-

होय है वही जो राम रच राखा।
को कर तर्क बढ़ावै साखा॥

बलराम--'साधु संत ऐसा भी तो कहते हैं:—

कर्म प्रधान विश्व कर राखा।
जो जस कीन सो तस फल चाखा॥
सकल पदारथ हैं जग माहीं।
कर्म हीन नर पावत नाहीं॥

कमलावती—'मैं पढ़ी लिखी स्त्री नहीं हूँ। मेरे भाग्य में लिखना पढ़ना बदा नहीं था। इसलिए इस सिद्धान्त पर मैं विशेष प्रकाश नहीं डाल सकती।'

बलराम—'फिर भी तेरी बात चीत से एक बात मिल गई और मेरे लिये वह बहुत ही शान्ति प्रद है।'

कमलावती—'वह क्या है?'

बलराम—'वह यह है कि मैं जो करूँगा। वह मेरे भाग्य के अनुसार होगा।

कमलावती–तुम क्या करोगे ?"

बलराम—"यह मैं तुझे न बताऊँगा। इसे भी भाग्य के आधीन समझ ले !"

कमलावती—"और मैं क्या करूँगी। इसे तुम बता सकते हो ?"

बलराम–"बताना भाग्य में नहीं है, इसी प्रकार समझ ले।"

कमलावती—यह अच्छा रहा मुझे लेने के देने पड़े। अपने ही हथियार से आप मारी गई। यह भी भाग्य ही है परन्तु इस वार्तालाप से मुझे भी एक बात सोचने समझने के लिये मिल गई।"

बलराम—"वह क्या है ?"

कमलावती—"तुमने तो बताने से इन्कार कर दिया। उसे भाग्य के आधीन बतलाया। मुझे इन्कार नहीं है। मैं तुम्हें बताती हूं। यह भी ललाट में लिखा हुआ है और वह यह है कि मैं तुम्हारे साथ रहूँगी और जीवन पर्यन्त यह साथ न छूटेगा।"

बलराम—"यह असम्भव है।"

कमलावती—"हाँ ! यदि असम्भव का शब्द मेरे ललाट पर लिखा होगा।"

बलराम ने कमलावती को आश्चर्य्य की दृष्टि से देखा। समझने को तो समझ गया कि कमलावती की समझ बूझ उससे कहीं बढ़ चढ़ कर है परन्तु चुपका हो रहा। रात का समय था जब यह बात छिड़ी थी। दोनों चुप चाप सो रहे। दूसरे दिन बलराम पतराम और कमलवावती के लापता होने की बात सारे गाँव में फैल गई। जगह जगह घर वालों ने छान बीन की कोसों उनके पाँव के चिन्ह से लोग पता लगाते हुये गये। अन्त में इस परिणाम पर पहुंचे कि पतराम और बलराम एक साथ गये हैं। कमलावती ने राह दूसरी ली है। कमलावती का दूसरी राह से जाना किसी की समझ में नहीं आया क्योंकि तीनों के पाँव के चिन्ह एक साथ एक

राह पर नहीं थे। यह आश्चर्य्य की बात थी। कई कोस जाने पर फिर यह चिन्ह नहीं मिले। हार मान कर ढूँढ़ने वाले अपने घरों को लौट आये। कई दिनों तक यही चर्चा होती रही। फिर सब भूल गये! संसार की यही दशा है।

पाँचवाँ अध्याय

आपत्तियाँ

दो पथिक चले जा रहे हैं एक बलराम और दूसरा पतराम है। लोग कहते हैं कि प्रेम और मित्रता में महान शक्ति है परन्तु घृणा और शत्रुता में अबलता नहीं पाई जाती। रम्माल ने अपनी भविष्य वाणी से बलराम के विचार को धक्का पहुंचाना चाहा था। कमलावती ने भी ऐसा ही किया। उसका बचपन का साथी पतराम तक उससे सहमत नहीं था। दूसरा मनुष्य होता तो निराश होकर बैठ जाता परन्तु इसके सर पर तो बदला लेने का भूत सवार था। वह इनके जादू और टोने से न उतरा। परिणाम यह हुआ कि विरोध करने वालों को भी उससे सहमत होना पड़ा नईमउद्दीन इसलिये बच रहा कि वह अलग थलग था। वरन् उसे भी छूत लग जाती। कमलावती किधर गई इसका पता न उसके पति को है न पतराम को है। दोनों जानते हैं कि वह घर ही में है। घर वालों ने सोचा कि बलराम उसे भी साथ ले गया परन्तु सच्ची बात कोई भी नहीं जानता। इतना ठीक है कि वह भी घर से ला पता होगई।

यह विचित्र बात है। सहानुभूति न रखते हुये भी लोगों को दृढ़ संकल्प शक्ति वालों के साथ सहमत होना पड़ता है। यह कोई नई बात नहीं है। इतिहास में ऐसा होता आया है। महाभारत में भीष्म पितामह द्रोणाचार्य्य और कृपाचार्य्य आदि को युधिष्ठिर के साथ सहानुभूति थी। वह समय समय पर दुर्योधन को बुरा भला भी कहते रहते थे। परन्तु इन वीरों ने युधिष्ठिर का साथ नहीं

दिया। सदैव दुर्योधन के लिये लड़ते भिड़ते रहे ऐसे ही दृश्य रामायण में भी देखने में आते हैं। बलराम के जीवन में भी वही बात पाई जाती है। बुरा हो या भला मनुष्य जब सम्बन्ध के जाल में फँस जाता है तब वह बुरे साथी के साथ देने से कतरा नहीं सकता। वह मरते मरते उसी का साथ देता है और उसी में मर मिटता है।

दोनों इस समय राह में हैं। राजस्थान के रेतीले मैदानों में इन्होंने बड़ी कठिनाइयों का सामना किया केवल दो साथी थे। साथ में कोई सामान तक नहीं था। तीरकमान और ढाल तलवार से सुसज्जित थे। हथियार रखना उस समय की सभ्यता समझी जाती थी। कभी वृक्ष के नीचे जंगल में बसेरा लिया। तीर से हरिन पाढ़े का शिकार किया, चक़माक़ से आग निकाली लकड़ियाँ चुनकर जलाईं, कबाब भूना और उसी से पेट भर लिया। कभी कभी फल फूल पत्ते और वृक्षों की जड़ से भूख दूर की बस्ती में किसी ने अतिथि सेवा के भाव से कुछ दे दिया उसी से काम चला, न मिला मालिक का नाम ले कर सो रहे। जैसा किया था वैसा ही भोगना भी पड़ा। बड़ी २ आपत्तियाँ झेलते हुये किसी प्रकार दिल्ली पहुंचे।

अब इस धुन में हुये कि बाबर किस तरह हाथ आये। एक तो क़िले में पहुँचना ही कठिन था। पहरा चौकी का वह प्रबन्ध था कि पक्षी तक पर नहीं मार सकता था दूसरे बाबर के साथ उसके विश्वासपात्र बाडीगार्ड रहा करते थे। इनको धोखा देना और फुसलाना टेढ़ी खीर थी।

बाबर बहुत बड़ा बुद्धिमान बादशाह हुआ है। इसी ने मुग़ल सलतनत की बुनियाद डाली। हिन्दू और मुसलमान दोनों की ओर से उसे खटका रहता था। हिन्दुओं से वह इतना चौकन्ना नहीं रहा होगा क्योंकि यह शान्ति और बे परवाह होते हैं परन्तु

मुसलमानों का भय उसे अवश्य था। क्योंकि हाल ही में उसने इबराहिम लोदी से सलतनत छीनी थी। मुसलमान ही उसे काबुल से बुला लाये थे। फिर भी इबराहिम लोदी के पक्षपाती कम लोग नहीं थे। मुसलमानों में उमंग थी। हर एक नाम के लिये मरता रहता था। इसी लिये वह मुसलमानों से बहुत खटकता रहता था।

दोनों मित्र दिल्ली पहुँचने को तो पहुँच गये परन्तु अब क्या करें! कोई युक्ति समझ में नहीं आती थी। हिन्दुओं से मिले जुले परन्तु एक भी उनमें से काम का नहीं निकला। यह सबके सब नये बादशाह से डरते थे। इन्हें बातचीत करने तक का साहस नहीं था। शाही जासूस भेष बदले हुए मन्दिर मसजिद मठ, धर्मशाला, बाज़ार, कुओं और दरिया के किनारे भेद लिया करते थे। हिन्दुओं को हिन्दुओं से सहायता मिलना सुगम नहीं है। बहुत छान बीन करने पर भी कोई इनके काम का हाथ नहीं आया।

करते भी तो क्या करते! सोच विचार कर यमुना के किनारे तख़ता बिछाया, उस पर फूस का झोंपड़ा बनवाया दोनों ही यमुना पुत्र बन गये। जो कोई नहाने आता उसे चन्दन लगाते, तख़्त पर बिठाते और जो कुछ यह पैसे दो पैसे दे जाता उसी से खाना पीना चलाते। यह बात दो में से किसी को भी पसन्द नहीं थी। राजपूत स्वाभाविक स्वतन्त्र होते हैं परन्तु शत्रुता, लड़ाई और बदला लेने के लिए वह हर तरह से दाँवँ पेच खेलते हैं। राजनीति ऐसी ही है। माँस खाने वाले पशु घात में बैठ कर छुपे चोरी से शिकार करते हैं। यह दशा घासपात खाने वालों की नहीं है। बलराम को बदला लेने की पड़ी थी। सोच समझ कर उसने इसी उद्यम को अच्छा और काम का समझा। आशा थी

कि कभी न कभी बाबर से मुठभेड़ हो ही जायगी उस समय राना साँगा का बदला लेना कुछ कठिन काम न होगा।

—❀○❀—

छटवां अध्याय

अपरिचित जाट

महीनों हो गये, जाड़ा आया, अपना रंग जमा गया, गर्मी आई और चमक दमक दिखला कर चली गई। बरसात के दिन आये। मूसलाधार पानी बरसने लगा। आकाश मण्डल और पृथ्वी दोनों को बरसात ने काली चादर उढ़ाकर एक करना चाहा। काली काली घटायें नभ मण्डल को ढक लेती थीं उस समय हाथ को हाथ तक नहीं सूझता था। ज्ञानियों का कथन है कि ज्ञान के प्रकाश से मनुष्य अद्वैतवाद के स्थल में आता है। सम्भव है यह ठीक हो परन्तु साधारण रीति से यह देखा जाता है कि जब अन्धकार में हाथ को हाथ नहीं सूझता, विवेक शक्ति आप ही आप हट कर सब को एक बना देती है। और अन्धकार में रहते हुए मनुष्य को अपने अतिरिक्त और किसी का ज्ञान नहीं होता।

पहले की बरसातों का क्या कहना है! बादल पृथ्वी से कुछ ही गज ऊँचे आकर बरसा करते थे। अब वह ऊँचे चढ़े रहते हैं। कभी बरसे कभी नहीं बरसे। पहले यह दशा नहीं थी। चार महीने झड़ी लगी रहती थी। मनुष्य और पशु घरों में रहते रहते तङ्ग आजाया करते थे। यह चार महीने आकाश के रोने धोने के थे। आठ महीने वह पृथ्वी को रुलाया करता था। चार महीने आप रोता था। उसके रोने से पृथ्वी की छाती फट जाती थी क्योंकि पृथ्वी में सहानुभूति है और आकाश निर्दयी है परन्तु वह इतना रोया करता था कि लोग उसकी आठ महीने

की को भूल जाया करते थे। उसके हृदय में पृथ्वी का प्रेम इतना घर कर लेता था कि उसकी आँखों के आंसू मीठे होते थे। खारेपन का कहीं नाम तक नहीं था। हां, समुद्र में वह बहा कर अपना निज रूप धारण कर लेते थे। यह तो अब भी ऐसा ही होता है परन्तु अब पहले जैसी बरसात कहां है !

अब न वह दिन हैं और न वह रातें।
रह गईं यादगार सब बातें॥

एक दिन आकाश पर बादलों की काली काली घटायें छा रही थीं। पानी भी छम छम बरस रहा था। कई मनुष्य यमुना के किनारे टीले पर बैठे हुए थे। यह टीला कुछ ऊँचा था। इसी पर हमारे नये यमुना पुत्रों ने फूस का झोंपड़ा बना कर उसी के भीतर तख़त बिछा रक्खा था। जिसमें नहाने वाले उसके नीचे आकर सुगमता से स्नान कर सकें। यमुना का पानी कभी ऊपर चढ़ आता था कभी नीचे उतर जाता था। इसका पता किसे था कि वह कब चढ़ेगा ! इसलिए टीले का सहारा लिया गया था। पानी बरसते समय लोग आकर उस झोंपड़े में शरण भी लेते थे। यह लोग हिन्दू ही हुआ करते थे। कालचक्र ने हिन्दुओं को चौकन्ना बना रक्खा था क्योंकि मुसलमान नया नया राज पाने के कारण हिन्दुओं के प्राण घातक शत्रु बन गए थे। दोनों ही अपने भाव को घना करते गये। थोड़े दिनों में इसने धार्मिक पक्षपात का रङ्ग पकड़ लिया और यह दशा हो गई कि यह दोनों पड़ौसी होते भी कभी एक दूसरे से मिलकर नहीं रहे। यही बात अब तक चली आ रही है। रस्सी जल गई परन्तु ऐंठन नहीं गई !

दोपहर का समय था जब पानी बरसना आरम्भ हुआ। यमुना का पानी बढ़ता ही गया। घटने में नहीं आया। किनारे के बड़े बड़े वृक्ष पानी की काट से धड़ाधड़ गिर रहे थे परन्तु टीले पर बैठे हुए लोग एकदम अचिन्त थे। वह यमुना माई से

प्रार्थना कर रहे थे। भंग पीने का बुरा रस्म उन दिनों कुछ ऐसा फैल गया था कि दिल्ली और मथुरा के हिन्दू इसके बिना नहीं रह सकते थे। तीसरा पहर ढला, यह बागों और दरिया के किनारे पहुंचे मेवात के साथ भंग पीसी और लोटों के लोटे चढ़ा लिए। भंग की तरंग में यह अपने आप को भूल जाते थे। दिल्ली में तो इसका रिवाज बहुत ही कम हो गया है। परन्तु मथुरा वृन्दाबन, गोकुल और बरसाना में अब तक लोग बुरी तरह से भंग पिया करते हैं। उस समय इस बुरे रोग ने बुरी तरह से दिल्ली को दबोच रक्खा था। टीले पर बैठे हुए लोग नशे में चूर थे। यही कारण है कि वह एक दम अचेत और बेसुध थे।

पानी का बरसना नहीं रुका। धीरे धीरे बढ़ता ही गया और नीचे टीले की जड़ को खोदता गया। घंटों के अन्दर उसने उसे खोखली कर दिया। फिर क्या था! टीला एक दम झोंपड़े और उन मनुष्यों के साथ गिरा और देखते देखते बल्लियों पानी इनके सरों पर आगया। लोग नीचे और पानी ऊपर किसी को क्या पता था कि यह बला सर पर आजायगी वह सँभल न सके। यमुना के बाढ़ ने तो पानी और मिट्टी से समाधि बनाकर उन्हें वहीं रख छोड़ा था।

वह मर मिटे होते। ऐसे समय कौन किसकी सहायता पर पहुँचता है। परन्तु संसार में जहाँ जहाँ बलायें आया करती हैं साथ ही कभी २ ऐसे लोग भी प्रकट हो जाते हैं जो जान पर खेल कर दुखियों की सहायता करते हैं। टीले वाले तो जल समाधि ले चुके थे। संयोग वश एक नव युवक जाट उधर से निकला। यह उसी समय पानी में कूदा और टटोल कर इन लोगों को पानी से बाहर निकाला। कुछ लोग तो तख्ते की चोट से घायल हो गये थे परन्तु इस साहसी पुरुष ने उन्हें मौत के मुँह से बाल बाल बचा लिया। केवल एक मनुष्य को बुरी तरह से चोट आई थी। वह

बेदम होगया था पानी बरसते ही में वह उसे भी दरिया से बाहर खींच लाया परन्तु इसके अतिरिक्त और क्या कर सकता था !

पतराम लतपत पानी से निकाला गया। नवयुवक ने उससे केवल इतना ही पूछा—"देखो ! तुम्हारे सब साथी बच गये या कोई और भी अभी रह गया है।" इसने इधर उधर देख कर उत्तर दिया—"सब बच गये केवल एक बलराम पानी में है। कहीं वह डूब तो नहीं गया !" इतना सुनते ही यह नवयुवक फिर साहस करके पानी में कूदा और डुबकी लगाकर हाथ पाँव से टटोलने लगा। थोड़ी ही देर में बलराम के कपड़े उसके पाँव से चिमट गये। इसने बल के साथ उसे ऊपर उभारा और तैरता हुआ उसके मूर्छित शरीर को किनारे पर खींच लाया। यह दूसरा मनुष्य था जो पानी के थपेड़ों से अचेत और अधमुआ हो गया था।

पतराम के जान में जान आई क्योंकि वह बलराम को न पाकर आँसू बहाने लग गया था। उसने उस साहसी जाट को धन्यवाद दिया।

जाट बोला—"पानी बरस रहा है और अन्धकार बढ़ता जा रहा है। यह बात चीत करने का समय नहीं है। तुम नवयुवक हो उस मूर्छित मनुष्य को उठा लो। मैं इसे सँभालता हूं और सब के सब मेरे साथ सुरक्षित जगह में चलो। यहाँ से पास ही एक मन्दिर और धर्मशाला है। वहाँ दवा पिलाई जायगी और दोनों चेत में आजायेंगे।"

कहने की देर थी। पतराम ने एक मनुष्य को अपनी पीठ पर लाद लिया। बलराम का बोझ जाट ने अपने ऊपर लिया और यह सब के सब गिरते पड़ते दस पन्द्रह मिनट के अन्दर धर्म्मशाले में पहुंचे जहाँ हर तरह का सामान पहिले ही से तैयार रहता था।

इनके कपड़े उतार लिये गये। शरीर को गर्मी पहुंचाई गई।

दोनों के मुँह से सेरों पानी निकला और वह धीरे २ चेत में आते गये। दिया बत्ती का प्रबन्ध किया गया धर्मशाला वालों ने इन सब को जिनकी संख्या बारह थी गर्म गर्म दूध पिलाया। उनमें कुछ बलराम तो उसी समय अच्छा हो गया। परन्तु दूसरा मनुष्य तख्त पर गिरने से बहुत घायल हो गया था। इसलिये दर्द से कराहता रहा। जान उसकी भी बच गई। जहाँ तक होसका जाट ने दवा इलाज का प्रबन्ध किया और उसे चुप चाप लेट रहने की आज्ञा दी। उसने पतराम से कहा—"अब यमुना का किनारा रहने योग्य नहीं है। आज रात को तुम यहाँ रहो। कल तुम्हारे लिए कुछ और प्रबन्ध कर दिया जायगा। वहाँ चले जाना और जब बाढ़ दूर हो जाय फिर तुम्हें अधिकार है। जहाँ चाहो जाकर रहो।"

पतराम अवसर पागया, उसने पूछा—"भाई! तुम कौन हो! क्या तुम्हारा दर्शन फिर कभी होगा?"

नवयुवक—"क्यों नहीं! मैं जाट हूं। जब से यमुना बाढ़ पर है मैं बराबर हाथ में भाला लिये हुये घाटों पर चक्कर लगाता रहता हूं। दुखियों की जान बचाने का काम मैंने अपने हाथ में ले रक्खा है मैं फिर तुम से किसी समय मिलूँगा।"

पतराम—"कब मिलोगे।?"

जाट—"समय ठीक ठीक नहीं बताया जा सकता। कौन जाने मैं कल कहाँ हूँगा! यमुना इस समय क्रोध में है। गाँव के गाँव बहे चले जा रहे हैं। हज़ारों मनुष्य और पशु नित्य ही यमुना की भेंट हो रहे हैं। मुझ से जो कुछ हो सकता है मैं करता रहता हूँ परन्तु तुम क्यों मुझ से मिलना चाहते हो?"

पतराम इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका।

जाट ने आप ही कहा—"यमुना ने तुम्हारा सब सामान

छीन लिया। तुम कंगाल हो गये। कुछ हर्ज नहीं। यह लो और अपना काम करो।'

यह कह कर वह जाट पतराम-को आश्चर्य्य में छोड़ कर उसी समय वहाँ से चलता बना। वह उसके हाथ में एक थैली धर गया था। जब दीपक के प्रकाश में देखा उस में पचास रुपये कुछ पैसे थे।

यह चकित हुआ। बलराम ने भी इनकी बातें सुनीं परन्तु दुर्बल होने के कारण न वह उस जाट को अच्छी तरह से देख सका और न बात चीत करने ही का अवसर मिला। जाट मिट्टी और कीचड़ में लतपत हो रहा था।

सातवाँ अध्याय

हिम्मत खाँ लोदी

रात समाप्त हुई। दूसरे दिन बारह मनुष्यों में से नौ तो अपने अपने घरों को चले गये क्योंकि वह दिल्ली ही के रहने वाले थे। यह बड़ी आपत्ति का समय था। कौन जाने उनके घर वालों ने उनके रात में घर न जाने से क्या क्या सोचा विचारा होगा! पानी का बरसना नहीं रुका! पानी भी बढ़ता ही गया। शहर के सारे लोग घबड़ा उठे। अब धर्म्मशाले में तीन ही मनुष्य रह गये थे—बलराम, पतराम और एक घायल मनुष्य। धर्मशाला वालों ने इनके रहने के लिए कुछ दूर पर एक और जगह ठीक कर दी जैसा कि नवयुवक जाट ने उन्हें समझा रक्खा था। दो ने तो प्रसन्नता के साथ जगह बदल दी। तीसरा उठ बैठ तक नहीं सकता था। राजपूतों ने जाट से प्रेम और सहानुभूति का पाठ पढ़ा था। जिसे वह कभी भूलने वाले नहीं थे। जब वह नये स्थान पर आने लगे इसे भी अपने साथ लेते आये थे।

रुपया पास था। पचास रुपये जो जाट दे गया था आज कल के हज़ार रुपये से भी अधिक थे। उस समय एक अच्छी पूँजी समझी जाती थी। सारी वस्तुयें सस्ती थीं। आजकल की सी दशा नहीं थी। एक बार अकबर बादशाह के समय में बहुत बड़ी महँगी पड़ी। उस समय मुख्य मुख्य वस्तुओं का भाव निम्न लिखित था:—गेहूँ पाँच आने मन, आटा आठ आने मन, अरहर की दाल आठ आने मन कड़ुआ तेल दो रुपये मन, जव आठ आना मन, शकर डेढ़ रुपया मन, दूध दस आने मन, और घी दो रुपये दस आने मन। बाबर के समय की सस्ती का क्या हाल रहा होगा पढ़ने वाले आप अनुमान कर सकते हैं। धर्मशाले वाले ने आवश्यक वस्तुयें इकट्ठी कर दीं और तीनों उसी घर में रहने लगे।

पतराम को इस जाट के विषय में सन्देह था। धर्मशाले वाले से पूछा—"यह जाट कौन है जो इस प्रकार दुखियों की सहायता करता रहता है?"

उसने उत्तर दिया—"मैं इसके विषय में अधिक नहीं जानता।"

पतराम—"फिर भी तुम ने कुछ भी तो सुना होगा?"

धर्मशाले वाला—"मैंने इतना ही सुना है कि इसका नाम सलामत चौधरी है।"

"क्या दिल्ली ही का रहने वाला है?

"नहीं! कहीं और जगह से आया है।"

"कहाँ से आया है?"

"मैं नहीं जानता।"

"इसने अपने देश का पता तो बताया होगा।"

"वह बहुत ही कम बात चीत करता है।"

"फिर भी तुमने कुछ न कुछ तो अवश्य ही सुना होगा।

"सुना तो है परन्तु यह नहीं सुना है कि वह कहाँ का रहने वाला है।

"शहर वाले जानते होंगे !"

"क्यों नहीं ! यह सारे दिल्ली में प्रसिद्ध है और बराबर दूसरों के आड़े काम आता रहता है।"

"इसने क्या क्या काम किये हैं ?

"यह लम्बी कहानी है। कोई कहाँ तक सुनाये। एक दो हों तो कोई कहे भी। बादशाह से लेकर उसने नीच से नीच तक की जान बचाई है।

"उसने बादशाह की जान कैसे बचाई ?"

"कहते हैं कि बादशाह शिकार को गया हुआ था। मचान बाँधा गया, हँकवा हुआ और शेर माँद से निकला। बादशाह ने तीर मारा। उसे लगा। वह क्रोध में आकर उछला और मचान से बादशाह को खींच लाया होता। सलामत चौधरी तमाशा देखने गया हुआ था। यह दशा उसने देखी, झपटा और अपनी कटार से उसके दो टुकड़े कर दिये। यह पहिली घटना है। दूसरी बार बादशाह सलामत दरिया की सैर कर रहे थे। नाव उलट गई। सारे साथी या तो डूब गये या दरिया उन्हें बहा ले गया। अब तक किसी का पता नहीं लगा सलामत चौधरी बहुत अच्छा तैरने वाला है। उसने यमुना में कूदकर बादशाह की जान बचाई और इन्हें क़िले तक पहुंचा आया। यह मैंने शहर वालों से सुन रक्खा है।

"तब तो बादशाह के पास आता जाता होगा ?

"यह मैं नहीं जानता। इतना अवश्य सुना कि बाबर ने प्रसन्न होकर दोनों बार उसे बहुत सा इनाम देना चाहा परन्तु उसने लेने से इन्कार कर दिया।

"तब तो यह घर का मालदार होगा ?"

"साधारण मनुष्य है। हाँ सौ पचास रुपये पास रहते हों तो आश्चर्य नहीं वरन् यह कहीं का सेठ साहूकार नहीं है।"

"शहर के किस मुहल्ला में रहता है ?"

"यह मैं नहीं जानता। जहाँ चाहता है रहता है। बादशाह का हुक्म है इसके साथ कोई रोक टोक न हो। यह इधर उधर घूमा फिरा करता है और लोगों का भला करता रहता है। ईश्वर इसका कल्याण करे !"

"तुम इसके घर का पता लगाओ। हम उनसे मिलेंगे।"

"जिस बात का पता लगेगा मैं तुमको सुना जाऊँगा।।"

पतराम ने अधिक पूछा पेखी नहीं की। उसे दो रुपये इनाम दिया। वह गद्‌गद् हो गया क्योंकि उस समय दो रुपये की बड़ी हैसियत थी !

धर्मशाला वाला चला गया। यह अपने काम काज में लगा।

घायल साथी के अच्छे होने में देर लगी। तब तक सभ्यता ने आज्ञा नहीं दी कि यह उसे वहाँ से अलग करते। उन्हें यह भी ध्यान था सम्भव है सलामत चौधरी ने घर और रुपयों का प्रबन्ध उसी के लिये किया हो।

वह धीरे धीरे अच्छा हो गया और उन्हें बहुत धन्यवाद दिया। पूछने पर उसने अपना नाम हिम्मत लोदी बताया और उनसे कहा—"मैं किसी विशेष कार्य्य से यहाँ दिल्ली में पड़ा हूँ। वह काम पूरा होने पर नहीं आता।"

आठवाँ अध्याय

हिम्मत खाँ लोदी से बातचीत

जब तक पतराम ने नाम नहीं सुना था तब तक कुशल था। नाम सुनते ही उसके मन में घृणा उत्पन्न हुई। बकरी और भेड़िया चाहे मिल कर रहें यह तो सम्भव है परन्तु हिन्दू और मुसलमान का मेल कैसा ! मिले नहीं कि हिन्दू का हिन्दूपन और

मुसलमान का इसलाम गया नहीं। पता नहीं इनकी सारी बातें क्यों उल्टी हैं। रहन सहन अलग, रंग ढङ्ग अलग, धर्म कर्म में भेद, बोल चाल में भिन्नता ! अन्य देश वालों को देखकर आश्चर्य्य होता है। और तो और ईश्वर के भजन बन्दगी तक के ढंग अलग अलग हैं। हिन्दू एक जगह बैठ कर पूजा करता है तो मुसलमान उठकर बैठक करते हुये निमाज़ पढ़ते हैं। वह ईश्वर के सामने स्तुति गाता है, यह गाने को हराम बतलाते हैं। वह दाढ़ी बढ़ाते हैं, हिन्दू मोछों को बड़ी बड़ी रखते हैं। यह उन्हें कटवा कर होठों के बराबर कर देते हैं। उनके अंगे के बन्द दाहिनी ओर से लगते हैं, इनकी बांई ओर से हिन्दू छूत छात से घबराते हैं, यह उसे बुरा नहीं मानते। हिन्दू किसी का जूठा न पियेगा, मुसलमान इसमें कोई दोष नहीं मानते। हिन्दू बाईं ओर से लिखते हैं, मुसलमानी अक्षर दाईं ओर से लिखे जाते हैं। क्या कहीं एक दूसरे का उल्टा तो नहीं बनाया गया ! पता तो कुछ ऐसे ही लगता है यदि हिन्दू धर्म पुराना और इसलाम नया न होता तो यह कहा जाता कि हिन्दुओं ने अपने आपको मुसलमानों के विरुद्ध बना रक्खा है। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता क्योंकि मुसलमानी धर्म नया है।

जब हिम्मत लोदी ने अपना नाम बताया पतराम को बुरा लगा क्योंकि वह मुसलमान निकला। पहिले यह विचार था कि यह हिन्दू होगा क्योंकि उसने हिन्दुओं का भेष बना रक्खा था मोंछ बड़ी ! दाढ़ी सफ़ाचट ! कपड़े भी वैसे ही थे। बात चीत में राम का शब्द बराबर जिह्वा पर रहता था। यही कारण है कि वह दोखा खा गया। यदि कहीं उसे पहिले पता लग जाता कि यह मुसलमान है तो वह उससे दूर ही दूर रहता !

फिर भी पतराम समझदार था। उसने अपने शब्दों से घृणा नहीं प्रकट की। समझ गया कि हिम्मत लोदी के इस भेष

बदलने का कोई न कोई मुख्य कारण होगा। वह बिना उसके जाने हुये उससे अलग होना नहीं चाहता था। इसलिये जो होना था वह तो हो ही चुका था। हिम्मत लोदी उनके बरतन में खा पी चुका था। बलराम और पतराम दिल्ली आकर धर्म को खो बैठे। अब हिन्दुओं के धर्म में रहना असम्भव था। यह हिन्दूधर्म की मुख्यता थी कि यदि किसी से ऐसी भूल चूक हो जाती थी तो वह उसे छुपाता नहीं था। आप पतित हो गया तो हो गया और बचे रहें। इसलिये वह खुल्लम खुल्ला अपनी बात को कह डालता था। हिन्दू जो इस अधिकता से मुसलमान हो गये उसका यही कारण था। प्रायश्चित का रिवाज इनके यहाँ पहले नहीं था।

उसने अपने भाव को दबा रक्खा। इतना मुँह से अवश्य निकल गया—"तुम को बता देना चाहिये था कि तुम मुसलमान हो। इससे तुम्हारा कुछ न बिगड़ता। हमारा धर्म बिगड़ गया।" हिम्मत लोदी को दुःख हुआ। वह नहीं चाहता था कि इनका धर्म बिगड़ता। उसने शोक के साथ इतना ही कहा– "स्वार्थी बावला होता है। मैंने किसी विशेष काम के लिये यह स्वाँग भरा है। तुम ने मुझ पर बड़ी कृपा की है इसलिये तुमसे झूठ नहीं बोल सका और क्या कहूँ।

पतराम उसके उद्देश्य को जानना तो चाहता था परन्तु सयाना होने के कारण उसने उतावलेपन से काम नहीं लिया बात को हँस कर टाल गया–"अच्छा! जो होने को था वह तो हो गया। ऐसा ही हमारे भाग्य में लिखा हुआ था। अब हम दोनों हिन्दू नहीं रहे परन्तु आज से तुम ऐसा करो कि हमारे बरतनों में खाने पीने से बचते रहो। यदि तुम्हारा काम हिन्दुओं का भेष ग्रहण करने से होता है तो कुछ हर्ज नहीं तुम बनावटी हिन्दू बने रहो। हिन्दू हिन्दू के बरतन में नहीं खाता पीता। लोग समझेंगे हम और जाति के हिन्दू हैं और तुम और जाति के हिन्दू

हो। लोदी भी हिन्दुओं की जाति है। हाँ! इसमें से बहुत लोग मुसलमान हो गये हैं। इसलिये उन से बचा जाता है। पहिले काबुल आदि देशों के लोदी सबके सब हिन्दू थे। अब मुसलमान हो गये हैं। हिन्दू लोदियों ने हमारे यहाँ लोधे और लोध नाम रख लिया है।"

हिम्मत लोदी उसकी बात मान गया। वह साथ साथ रहने लगे। उनमें प्रेम बढ़ गया। यह भी स्वाभाविक बात है। जैसा स्वभाव होता है, वैसे ही साथी भी मिलते हैं। कौवे का साथी कौवा और हंस का साथी हंस होता है।

बलराम और हिम्मत लोदी दोनों एक स्वभाव के थे। पतराम इनके मिलाने की कड़ी था।

साथ रहते रहते हिम्मत लोदी को भी पता लग गया कि यह भी किसी विशेष कार्य से दिल्ली आये हुये हैं परन्तु वह क्या काम था। इसके पूछने का साहस नहीं हुआ। बलराम पतराम और हिम्मत तीनों ही एक दूसरे का भेद जानना चाहते थे परन्तु पूछे कौन! एक दूसरे का मुँह देखते रहते थे।

दो सप्ताह हो गये! बाढ़ का डर जाता रहा। बलराम और पतराम ने फिर यमुना के किनारे झोंपड़ा बनवाया, तख़त बिछवाया और पुराना काम करने लगे क्योंकि बेकार रहने से लोगों को सन्देह करने का अवसर मिलता। हिम्मत लोदी ने भी उनका साथ नहीं छोड़ा।

एक दिन अवसर पाकर पतराम ही ने बात बात में छेड़ छाड़ कर दी—'भाई हिम्मत! तुमने यह नहीं बताया कि हिन्दू भेष धारण करने से तुम्हारा अभिप्राय क्या है? क्या कहीं तुमको हिन्दू बनने की तो इच्छा नहीं है?'

हिम्मत—'क्या मुसलमान हिन्दू हो सकता है?'

पतराम—'नहीं! यह असम्भव है।'

हिम्मत—'तो क्या तुम मुझे नादान समझते हो जो ऐसा प्रश्न कर रहे हो ?'

पतराम—'सब की असलियत जानी जा सकती है परन्तु मानुषी भाव ऐसे होते हैं कि उनका पता पाना महा कठिन है। मनुष्य का हृदय एक विचित्र रहस्य है। इसका थाह पाना साधारण काम नहीं है।'

हिम्मत—'यह सच्ची बात है परन्तु धर्म के लिए मैं बहु-रूपिया नहीं बना। मैं धर्म को वह मुख्यता नहीं देता जैसा तुम समझ रहे हो।'

पतराम—'क्यों ?'

हिम्मत—'क्योंकि धर्म का सम्बन्ध सर्व साधारण से है जो साधारण समझ बूझ रखते हैं। विद्वानों बुद्धिमानों और फ़िलासफ़रों का कोई धर्म नहीं होता। इसी प्रकार हाकिमों और बादशाहों का भी कोई धर्म नहीं है। धर्म के नाम पर मूर्ख जान देते हैं। यह धर्म ग़ुलामी की ज़ञ्जीर है जिसके शासन करने वाले अपनी प्रजा को बाँध कर रखते हैं।'

पतराम—'मैं इस बात को नहीं मानता।'

हिम्मत—'क्यों ?'

पतराम—'इसलाम आप धर्म है और मुसलमान इसी धर्म के नाम पर जान देते हैं। हिन्दुओं की भी यही दशा है।'

हिम्मत—'धर्म न होता तो हाकिम किस रस्से से अपनी प्रजा को बांधते। इसी के नाम पर धर्म युद्ध स्वार्थ साधन के लिए होता रहता है और लोग हाकिमों की उँगलियों पर नाचते रहते हैं।'

पतराम—नहीं ! कम से कम इसलाम तो बहुत बड़ा धर्म है।'

हिम्मत—'इसमें सन्देह ही क्या है ? और हथियारों की

तरह वह भी हुकूमत का एक हथियार है और बहुत बड़ा हथियार है।'

पतराम—'मैं तो इसी धर्म ही को सब कुछ समझ बैठा था।'

हिम्मत—'मान प्रतिष्ठा राज और अधिकार। मनुष्य सबसे अधिक इन्हीं के लिए मरता है।'

पतराम—'तुम कैसे मुसलमान हो जो ऐसा कहते हो?'

हिम्मत—'मैं ऐसा ही मुसलमान हूँ नहीं तो दाढ़ी न बनवाता और न हिन्दुओं का भेष धारण करता।'

पतराम—'क्या तुम इसे सिद्ध कर सकते हो?'

हिम्मत—'तुम हिन्दू हो। मुसलमानी बातों को कठिनाई से समझ सकोगे। इसी एक बात से समझ लो कि हज़रत अली को हुकूमत और प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये लोगों ने मारा था। हज़रत रसूल के दो निवासे भी इसीलिए तलवार की धार से घाट उतारे गए थे।'

पतराम—"मारने वाले मुसलमान नहीं थे।"

हिम्मत—"तब ही तो मैंने कहा कि हिन्दू बड़ी कठिनाई से मुसलमानी बातों को समझ सकेगा। मारने वाले मुसलमान ही थे। इसी मान प्रतिष्ठा के लिये हज़रत के जीते ही एक इसलाम के बहत्तर टुकड़े कर दिये गये।'

पतराम—"मैं इन भेद वादियों को हज़रत का सच्चा अनुयायी नहीं मान सकता। वह भूल पर थे।'

हिम्मत—'तुम ऐसा ही समझो।'

पतराम—'जो कुछ तुमने सोचा समझा है उसके तुम आप जवाबदेह हो परन्तु इस लम्बी चौड़ी बात चीत से मुझे तुम्हारी नीयत का पता नहीं लगा।'

हिम्मत—"कहने को तो मैंने सब कुछ कह दिया और

तुम समझ भी गये होगे। जान जान कर अज्ञान बन रहे हो परन्तु क्या तुम जानना ही चाहते हो।'

पतराम—"यदि तुम हमें विश्वासपात्र समझते हो तो कह सकते हो वरन् उसकी आवश्यकता ही क्या है?'

हिम्मत—"मैं तुम लोगों के रंग ढंग को दो सप्ताह से देख रहा हूँ। तुम विश्वास करने योग्य हो। मैं अपना भेद तुम से आज नहीं कल कह दूँगा।

नवाँ अध्याय

बलराम और पतराम

बलराम ने पतराम से अकेले में कहा—"यह हिम्मत खां जाति का लोदी है। दिल्ली की सलतनत अभी लोदियों के घराने में थी। बाबर ही ने उसे छीना है। सम्भव है यह भी हमारी तरह बाबर का शत्रु हो।"

पतराम—"पता तो कुछ ऐसा ही लगता है परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी इच्छा क्या है।"

बलराम—'राजवंश का है। सम्भव है राजपाट के लौटा लेने की धुन में हो।'

पतराम—'इसके लक्षण पाये नहीं जाते।'

बलराम—'क्या यह भी भाग्य ही आधीन है?'

पतराम—"मैं तो कुछ ऐसा ही समझ रहा हूँ। होनहार बिरवान के होत चीकने पात। यह पुरानी कहावत है। इसके अतिरिक्त खोई हुई वस्तु बड़ी कठिनाई से मिलती है।'

बलराम—"भाई! तुम जब कोई बात मुँह से निकालते हो निराली ही होती है। तुम्हारे विचार के अनुसार बादशाह संसार में बने बनाये आते हैं। परिश्रम और पुरुषार्थ से कोई बादशाह

नहीं होता । यह बात तो थी । अब यह कहते हो कि जिस घराने से हूकूमत निकल गई उसे फिर नहीं मिलती ।"

पतराम—"देखने में तो ऐसा ही आ रहा है।

बलराम—"परन्तु राना साँगा तो अपने परिश्रम से राजा हुआ था ।"

पतराम—'राज के लक्षण उसमें पहिले से थे वरन् यह भाव उसके हृदय में उत्पन्न न होता ।'

बलराम—'उसने परिश्रम क्या कम किया था ! दूसरे दावी दारों से लड़ा । बहुत दिनों तक इसी राज के लिए छुपा २ फिरा । अहीरों की सेवा की । उनकी रोटी तक पकाई, गाली और झिड़की सही । यह तुम जानते हो । ऐसी घटनाओं के होते हुए कैसे कह सकते हो कि उसे परिश्रम नहीं करना पड़ा ।'

पतराम—'मेरा कहना यह नहीं है । परिश्रम तो उसने किया । यह भी भाग्यवश था परन्तु वह राजा होकर संसार में आया था । तुमने सुना होगा धूप में वह मैदान में सो रहा था । साँप ने अपने फण से सर पर छाया कर रक्खी थी । यह सब उसके राजा होने के लक्षण थे ।'

बलराम—'मैं सांगा की प्रशंसा सुन कर प्रसन्न हो जाता हूं । वह जन्म ही से राजा था । यह और भी बड़ाई की बात है ।'

पतराम— संसार में जो कुछ है वह जन्म ही से तो है । राजा, योगी, कवि, जौहरी और गाने वाले यह सबके सब बने बनाये संसार में आते हैं । कोई किसी के बनाने से नहीं बनता ।'

बलराम—'मैं इसी बात को तो मानता नहीं । कर्म भी तो कोई वस्तु है ।'

पतराम—'कर्म भाग्य है । देख लो एक बाप के सारे बेटे एक जैसे नहीं होते । कोई कुछ होता है कोई कुछ । एक ही वृक्ष के दो पत्ते एक जैसे नहीं होते । इनके काम भी सृष्टि में अलग

अलग हैं। फिर कैसे कोई मान ले कि भाग्य कोई वस्तु नहीं है।'

बलराम—'यह भाग्य है क्या ?'

पतराम—'सृष्टि में आने वाली और होने वाली घटनाओं का दृश्य ! यह भाग्य है। यहां कोई काम बिना सोचे समझे नहीं होता। सब कुछ पहले से सोचा समझा और विचारा हुआ है।'

बलराम—'अच्छा ! बादशाहों और राजाओं के विषय में तो थोड़ी देर के लिए मैं इसे सच भी मान लेता हूँ परन्तु तुम कहते हो कि योगी और फ़क़ीर भी जन्म ही के होते हैं यह क्या बात है।

पतराम—'योगी और फ़क़ीर ही क्यों ! यहां जो कुछ है जन्म के संस्कार से है। भाँड़ गवैये सबकी यही दशा है। बनने से कोई नहीं बनता और न बिगाड़ने से कोई बिगड़ सकता है। बनना बिगड़ना सब भाग्य के आधीन है। देखो बनारस में जन्म ही से एक महात्मा कबीर साहब होगये हैं जिनकी सिकन्दर लोदी से बातचीत हुई थी। बादशाह को एक दम चुप ही हो जाना पड़ा यह पढ़े लिखे भी नहीं थे। एक दम अपढ़ थे परन्तु जन्म ही से परम संत थे।'

बलराम—'मैं तुम्हारे साथ सहमत नहीं हूँ। यह विचार दुखदाई और हानिकारक है।'

पतराम—'ऐसा न मानना तुम्हारे भाग्य में है। मैं इस रहस्य को समझ गया हूं। इसलिए बुरा नहीं मानता। यह भी मेरे भाग्य की बात है।'

बलराम—'परन्तु यह क्यों कहते हो कि जब राज किसी घराने से निकल जाता है तो फिर उसमें नहीं आता।'

पतराम—"यह मेरा अनुभव है और अनुमान की बात है। जैसे बचपन जवानी अधेड़पन और बुढ़ापा लौट कर नहीं आते वैसे ही सम्भव है मेरा विचार भी ठीक हो। जिन जिन घरानों से राज

निकल गये फिर लौटकर उस घराने में नहीं आये। यह ऐतिहासिक बातें हैं। अब तो ऐसा ही देखा गया है। आगे के लिए नहीं कहा जा सकता।'

"बलराम—"क्या अब साँगा की सन्तान से राज निकल जायगा ?'

पतराम—"तुम बहक गये। साँगा के घराने से अब तक हुकूमत नहीं गई। बाबर ने साँगा को जीत लिया। वह मारा गया परन्तु उसकी हुकूमत अब भी वैसी ही है। उसकी सन्तान से हुकूमत नहीं छीनी गई। मैंने एक साधारण बात कही है।

बलराम—'इस के समय इसके कहने की क्या आवश्यकता थी ?

पतराम—"हिम्मतखाँ लोदी के विषय में तुम ने कहा है कि वह सलतनत का दावीदार है ! इस पर मैंने अपना विचार प्रकट किया। पहले गुलाम बादशाह हुये। वह गये। फिर खिलजी आये। यह भी गा बजा गये। तुग़लक़ों ने अपने नाम का डंका बजाया आज उनका कहीं पता नही है। यही दशा लोदियों की हुई।

बलराम—"मुझ से कहा तो कहा हिम्मत खाँ लोदी से न कहना !'

पतराम हँसा—"क्यों ?'

बलराम—"यदि वह बाबर का शत्रु है। तो मैं उससे काम लूँगा।'

पतराम—"काम लो। तुम्हें रोकता कौन है ?'

दसवाँ अध्याय

गुप्त भेद

हिम्मत—"क्यों जी ! तुम मेरी नीयत जानना चाहते हो ?'

पतराम—"भाग्य ने हमको एक दूसरे का साथी बना दिया। इसमें क्या रहस्य है इसे कौन जानता है।

हिम्मत—"तुम भी तो यहां किसी विशेष कार्य से रहते हो तुम दान लेने वाले ब्राह्मण नहीं हो किन्तु बनावटी भिखारी हो।"

पतराम—'तुमने कैसे जाना ?"

हिम्मत—"पक्षी पक्षी की भाषा और चाल ढाल को भाँप लेता है। मैं तो फिर भी मनुष्य हूँ।"

पतराम—"मनुष्य के विचार सदैव ठीक ही नहीं होते। यह कोई सिद्धान्त नहीं है कि उसका अनुमान बराबर ठीक हो।"

हिम्मत—"देखो! जान बूझ कर अज्ञानता की बातें न करो। पहले तुम यह बताओ कि दिल्ली में क्यों पड़े हो ? तुम यहाँ के रहने वाले नहीं हो। हाथ पाँव रंग रूप बोल चाल और भाषा तुम्हें सन्देह जनक ठहराते हैं।"

पतराम—"उदर निमित्त बहु कृत भेषा।" रोटी तो किसी तरह कमा खाय मोछेन्दर। जब और कोई युक्ति नहीं सूझती तो भिक्षा माँगने की सूझती है।"

हिम्मत—"झूठ! इतना तो तुमने मान लिया कि तुम वह नहीं हो जो बने हुये हो। अब कुछ और आगे बढ़ो तब मैं अपना भेद कहूँ

पतराम—"इस कहने सुनने में क्या धरा है! भाँपने को तो हमने भाँप लिया कि तुम किस धुन में हो। केवल तुम्हारे मुँह से सुनने की इच्छा है।"

हिम्मत—"तुमने क्या भाँपा ?"

पतराम—"तुम बाबर के शत्रु हो और लोदियों का गया हुआ राज लौटाना चाहते हो। अवसर नहीं मिलता। इसलिये

समय की ताक में लगे हो। इस काम में बहुत से लोग तुम्हारे साथी हैं जो कई जगह बिखरे हुये मन सूखे लड़ा रहे हैं। हमने यह भाँपा है।"

हिम्मत थोड़ी देर के लिये चुप रहा। फिर बोला—और तुम! तुम भी तो बाबर के शत्रु हो।"

पतराम ने उसे गहिरी दृष्टि से देखा—"यह तुम ने कैसे जाना।"

हिम्मत—"सुनो! तुमसे क्यों छुपाऊँ! मैं बीमार था। तुम मुझे अचेत और बेसुध समझ कर चुपके चुपके बात चीत करते रहते थे। यह सच है कि तुम्हारे मुँह से आज के अतिरिक्त बाबर का नाम कभी नहीं निकला था परन्तु जानने वाले जान ही जाते हैं। तुम केवल दो साथी हो। और कोई सहायक तक नहीं है। बिना सोचे समझे घर से बाहर निकल खड़े हुये। अब या तो अपना काम करो या इसी धुन में मर मिटो यह तुम्हारी नीयत है। बिना काम किये हुये तुम देश को न जाओगे और न यहाँ से टलने वाले हो।"

पतराम हँसा—"तुम्हें बहुत दूर की सूझी।"

हिम्मत"—हम तीनों एक ही नाव पर सवार हैं। या तो वह किनारे लगेगी या मँझधार में डूबेगी! दो में से एक तो होना ही है। अब कहो क्या कहते हो?"

पतराम—"मैं कुछ नहीं कहता।"

हिम्मत—"झूठ! ठठेरों ठठेरों में अदल बदल नहीं होता और न होना चाहिये। इन बातों से काम कोई होता नहीं हाँ! समय व्यर्थ जाता है।"

पतराम फिर तुम चाहते क्या हो?"

हिम्मत—"यह विचित्र प्रश्न है। जो मैं चाहता हूँ वही तुम भी चाहते हो। मेरी नीयत को तुम बिना कहें हुये झांप

गये। तुम्हारी नीयत का अब तक स्पष्ट रूप से पता नहीं लगा। इसलिये कुछ सोचा नहीं जा सकता।"

पतराम—"बात तो सच्ची कह रहे हो। अब इससे अधिक और क्या चाहते हो?"

हिम्मत—"केवल इस बात के जमाने की इच्छा है कि कहीं हमारा और तुम्हारा लक्ष एक तो नहीं है। यदि ऐसा है तो हमारे दिल न मिलेंगे। और न हम अन्त समय तक एक दूसरे का साथ दे सकेंगे। यदि उसका पता लग जाय तो फिर हम तुम मिल जुलकर उस कठिनाई को दूर कर सकेंगे।"

पतराम—"तुम समझ बूझ वाले हो। काम तो हमको तुम को एक ही करना है। हाँ हमारी नीयतों में भिन्नता है और भिन्नता सृष्टि में होनी भी चाहिये। यदि यह न हो तो सौन्दर्य्य जाता रहे।'

हिम्मत—"कहने को तो तुमने इन जुमलों में सब कुछ कह दिया परन्तु यह विचार के प्रकट करने का फ़लसफ़ाना ढङ्ग है। तुम जानते हो संसार में सब लोग फ़िलास्फ़र नहीं होते और न हो सकते हैं।"

पतराम—"स्थूल स्वभाव वाले स्थूल शब्द का प्रयोग करते हैं। स्थूल रूप बनाने की आवश्यकता उस समय होती है जब सूक्ष्म बात समझ में नही आती। जहाँ सूक्ष्मता की समझ है वहाँ स्थूल और भद्दे शब्दों से क्यों काम लिया जाय।"

हिम्मत—"तुम फिर फ़िलास्फ़रों की भाषा में बातचीत कर रहे हो।"

पतराम—"तुम समझते हो इसलिये इस प्रकार बातचीत की जा रही है। तुमको समझना चाहिये कि संसार में कोई सार वस्तु का प्रेमी होता है और कोई असार को ग्रहण करता है। मनुष्य नाज खाते हैं। पशु भूसा और घास से पेट पालते हैं।

नाज और भूसा दोनों ही उस समय मिलते हैं जब फ़स्ल काटी जाती है। अब समझे या अब भी नहीं समझे ?"

हिम्मत—"समझने को तो मैं पहिले से समझ रहा हूँ। औरों के लिये चाहे यह भूल भुलैयाँ हो परन्तु मेरी दृष्टि तो तत्व पर है।"

पतराम—"जो जिसका अधिकारी है वह उसे पाता है। यह तो बनी बनाई बात है।"

हिम्मत—"सच है।"

पतराम—"स्त्री लड़के की माँ, पति की पत्नी सास की बहू है। यह भिन्न रूप हैं। परन्तु स्त्री तो हर समय एक की एक है। उसमें भेद कहाँ ! इसी प्रकार औरों के विषय में भी समझो। जो संस्कार और अधिकार का पता रखता है वह शब्दों पर नहीं अड़ता ! अर्थ और तत्व पर जाता है।"

हिम्मत—"मैं समझ गया मुझे बोध हो गया।"

बलराम—"मैंने तो कुछ नहीं समझा मुझे भी समझाओ।"

पतराम—"खेल खिलाड़ी का पैसा मदारी का। हम खिलाड़ी हैं। हिम्मत खाँ मदारी है। हमारा काम खेल खेलने का है। हिम्मत खाँ की आंख पैसे पर है। अब तो तुम समझ गये होगे !"

बलराम—"हां ! मैं भी समझ गया।"

ग्यारहवाँ अध्याय

षड़ यन्त्र

हिम्मत खाँ लोदी बहुत लम्बा, लम्बी नाक, तंग पेशानी और गेहूँये रंग का था। ऊपर की बातों से इसका पता नहीं लग सकता था कि वह आप राज सिंहासन पर बैठना चाहता था या किसी और के लिये काम करता था। उससे केवल इतना ही पता

लग सकता था कि वह सिंहासन को हाथ में लेना चाहता था परन्तु उसकी अपनी क्या हैसियत थी इसको उसने स्पष्ट शब्दों में नहीं कहा। पतराम से और उससे जो बात चीत हुई थीं वह भी इस विषय पर प्रकाश नहीं डाल सकती थीं। फिर भी उनमें सहानुभूति उत्पन्न करने के लिये यह सब बहुत था।

बलराम और पतराम साहसी और उत्साही होते हुये भी नादान कहे जा सकते हैं क्योंकि उन्होंने अकेले बादशाह के मार डालने की नीयत की थी। उन्हें सफलता होती या न होती यह दूसरा प्रश्न था। इतिहास के देखने से पता लगता है कि अकेला मनुष्य भी कभी २ इतना बड़ा काम कर सकता है जो हज़ारों सवारों की फ़ौज से भी नहीं हो सकना। फिर भी ऐसे कामों में सहायता की आवश्यकता हुआ करती है परन्तु हिम्मत खाँ लोदी की यह दशा नहीं थी। अकेला तो वह भी था परन्तु उसके जैसे सैकड़ों अकेले मनुष्य दिल्ली में काम कर रहे थे और सहायता के लिये सेना का भी उचित प्रबन्ध था। उसे रुपये पैसे की कमी भी नहीं थी। बाबर चौकन्ना होता हुआ अभय था। इस स्वभाव को सब लोग जानते थे। इसी के भरोसे हमारे दोनों राजपूत काम कर रहे थे।

तीनों ही के हृदयों में शत्रुता का भाव प्रबल था परन्तु सफलता की युक्ति किसी को भी नहीं सूझी थी हिन्दू मुसलमान के मिलाप ने इसकी राह निकाल दी।

जिस घर में बलराम पतराम और हिम्मत खाँ रहते थे वह शाही क़िले के पास ही था। इस घर ने हिम्मत खाँ को काम करने की सूझ सुझादी। यह घर उनके रहने के लिये थोड़े ही दिनों के लिये मिला था। हिम्मत खाँ ने सोचा कि यदि वह कुछ दिनों इसमें रहने पाता तो सफलता पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाती।

घर किसी हिन्दू का था। सलामत चौधरी ने इसे अपने

ढंग पर ले लिया था। उसने क्यों ऐसा किया था उसका उत्तर आगे चलकर आप ही आप मिल जायेगा। यह लम्बा चौड़ा खुला हुआ और हवादार था! क़िले के पास इसका होना राज कर्मचारियों की लापरवाही बतलाता है। इसके अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है!

तीनों ही मनुष्य देर तक अपनी अपनी युक्तियों पर बहस करते रहे।

हिम्मत ख़ाँ लोदी ने कहा—'यदि यह घर थोड़े दिनों और हमारे हाथ में रहे तो काम सुगमता से निकल जायगा।'

पतराम—'क्यों? इसमें क्या बात है?'

हिम्मत—'पहिले इसका निश्चय हो जाय कि यह घर कुछ दिनों हमारे हाथ में रहेगा या नहीं तब मैं अपनी सम्मति प्रकट करूँगा?'

धर्मशाले वाले से पूछने की आवश्यकता पड़ी। उसे आज्ञा मिल चुकी थी कि इस घर को वह दो दिन के अन्दर ख़ाली कराले क्योंकि अब बाढ़ नहीं है। उसने आकर इन लोगों से घर ख़ाली करने के लिये कहा। हिम्मत ख़ाँ की आशाओं की लता मुरझा गई पतराम चलता पुरजा था। वह कहने वाले के एक शब्द को सुनकर तह तक पहुँच जाता था। वह जान बूझ कर चुप हो रहा। यों भी नित्य घाट पर जाते थे। इनके पास बहुत कुछ सामान नहीं था। कपड़े और बरतन उठाये और यमुना के किनारे लाकर रख दिये। हिम्मत ख़ां को भी साथ देना पड़ा परन्तु उसके दिल को बड़ी ठेस लगी उसकी समझ में आया हुआ अवसर हाथ से निकल गया। वह भी घाट पर आया परन्तु वहां उसके रहने का कोई प्रबन्ध नहीं था इसलिए वह कभी २ दिन डूबने के पहले घाट पर आकर उनसे मिल लिया करता था। उसका सारा समय शहर में व्यतीत होता था जहां उसके अपने आदमी अधिकता के साथ रहते थे। यह

सबके सब बाबर के मारने की घात में लगे हुये थे।

हिम्मत बलराम और पतराम तीनों सलामत चौधरी से मेल मिलाप करना चाहते थे। साथ ही डरते भी थे क्योंकि वह बाबर की नाक का बाल बना हुआ था। उन्हें भय था कि कहीं लाभ के बदले हानि न पहुँच जाय! इसलिये भूलते २ इस विचार को लोग भूल ही गये।

बरसात बीत गई। जाड़े के दिन आये। काम की कोई राह नहीं निकली। तीनों एक दिन यमुना के किनारे बैठ कर बातचीत करने लगे।

हिम्मत खाँ—'समय हाथ से निकलता जा रहा है। काम निकला हुआ दिखाई नहीं देता।'

पतराम—'ऐसे काम उतावलेपन से नहीं होते हाथ पर सरसों नहीं जमती। देर लगती है। घबराना अच्छा नहीं।'

हिम्मत—'इनकी भी हद होती है। वृक्ष की जड़ पहिले पतली होती है। एक बच्चा भी उसे उखेड़ सकता है। समय मिलने दो। जहां उसमें पुष्ट आई फिर हाथी भी उसे नहीं हिला सकता।'

बलराम—'जो हो झटपट हो।'

पतराम—'जल्दी का काम पूरा नहीं उतरता।'

हिम्मत—'देर करने में उत्साह और उमंग दब जाता है।'

पतराम—'उमंग क्षण भंगी है। इसका विश्वास नहीं। सृष्टि नियम के अनुसार विचार में भी दृढ़ता धीरे धीरे आती है। जब वह जवानी पर आगये फिर वह पक्के हो जाते हैं। और काम करने वाले उनसे लाभ उठा लेते हैं।'

बलराम—'इस देर से तुम्हारा क्या आशय है।'

पतराम—'समय और अवसर को देखना! दूरदर्शी होकर काम करना! शत्रु सभी के होते है। अवस्था और दशा बदलती

रहती है। जब किसी के बहुत शत्रु होगये उसके मित्रों की मण्डली टूटने लगती है। उस समय नीति निपुण मनुष्य शत्रुओं से मेल जोल रख कर उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर देता है। जहां तक मैं देख रहा हूँ बाबर प्रेम के मार्ग पर चल रहा है। वह अपने प्रेम से प्रजा के हृदय को अपनी मुट्ठी में करता जा रहा है। उसके शत्रु कम हैं। इसके अतिरिक्त हमारा काम अभी तक आरम्भ नहीं हुआ और न उनके उपाय सोचे गये।"

हिम्मत—'वह क्या हैं ?

पतराम—'शत्रुदल में फूट डलवा देना, लालच देकर उसके साथियों को अपनी ओर कर लेना, उसके मन में भय उत्पन्न कर देना जिसमें उसकी वृत्तियां एकाग्र होकर बलवान न होने पायें।'

हिम्मत—'दूरदर्शी मनुष्य भयभीत होकर चौकन्ना भी हो जाता है।'

पतराम—'हां ! यह भी होता है।'

बलराम—'अकेला मनुष्य भी तो काम कर सकता है।'

पतराम—'हर समय नहीं। जत्था का सामना जत्था ही से किया जाता है।'

बलराम—'तब तो नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी हम सेना इकट्ठी करके अपना काम नहीं कर सकते।'

हिम्मत—'बाबर के खेमे में फूट डालने का यत्न हो रहा है।'

पतराम—'उसका परिणाम क्या हो रहा है ?'

हिम्मत—'अभी तो कुछ भी नहीं।'

पतराम—'तो काम करते चलो।'

बलराम—'मैं तुम्हारी बातों को नहीं मानता। दिन व्यतीत होते जायँगे। हम बूढ़े हो जायँगे और काम न होगा।'

पतराम—'ऐसा भी हो सकता है।'

बलराम—'तो काम झटपट हो। अपाहिजपना अच्छा

नहीं है।'

पतराम—'युक्ति क्या है ?'

हिम्मत—'मैंने एक बात पहिले ही से सोच रक्खी है। इशारा भी किया परन्तु तुम लोगों ने ध्यान नहीं दिया। इससे काम के जल्द होने की आशा है। कोई बड़ा मकान किराये पर लिया जाय। उससे क़िले तक सुरङ्ग बनाई जाय और इस सुरङ्ग से शाही महल में पहुँच कर बाबर का काम तमाम कर दिया जाय।'

बलराम—उछल पड़ा—'यह युक्ति बड़ी ही अच्छी है।'

पतराम—'काम कैसे हो ?'

हिम्मत—'रुपये पैसे की कमी नहीं है। क़िले के एक एक कमरे का नक़शा मेरे पास है। मेरे आदमी क़िले में काम करते हैं। बाबर के सोने, उठने बैठने तक का पता पल पल मिलता रहता है। काम निकलने में कोई सन्देह नहीं है।'

बलराम—'तो तुम इतना ही करो। और काम मैं कर लूँगा।'

पतराम—'इतनी जल्दी न करो ! बिना सोचे हुए ऐसे काम में हाथ डालना अच्छा नहीं होता।'

बलराम—'बहुत सोच चुके। समय नष्ट होता चला जा रहा है। तुम्हारा स्वभाव ही ऐसा है।'

पतराम हँसा—'मेरा सिद्धान्त यह है कि जो हो उसमें सारा बल लगा दिया जाय जिसमें पीछे से लज्जित न होना पड़े।'

बलराम—'होना भी ऐसा ही चाहिए।'

हिम्मत—'क्या तुम मुझसे सहमत नहीं हो ?'

पतराम—'क्यों नहीं ! विरोध करना स्वभाव नहीं है। मैं तो मेल मिलाप के साथ रहकर काम करना चाहता हूँ।'

बलराम—'फिर तुम आज्ञा क्यों नहीं देते ?'

पतराम—'मेरी ओर से तुम्हें आज्ञा है। यदि हिम्मत खाँ में हिम्मत है और उनके पास पूरा पूरा सामान है तो वह काम में हाथ लगा दें। इस समय इससे अच्छी और कोई युक्ति समझ में नहीं आती।'

हिम्मत खाँ ने शाही क़िले के नक़शे दिखलाये, उन्हें निश्चित स्थान भी बतला दिया। अब तीनों को सफलता की आशा हो गई।

—❀०❀—

बारहवां अध्याय

सफलता के लक्षण

सृष्टि में बुराई और भलाई दोनों ही के सिद्धान्त काम करते रहते हैं। मनुष्य सोच विचार वाला होना चाहिये। वह अपने हृदय के केन्द्र पर बैठकर सफलता के सामान चारों ओर से खींच सकता है। यह बनी बनाई बात है। प्रकृति माता सबकी सहायता के लिए तत्पर रहती है। जिसकी मानसिक शक्ति प्रबल है उसके लिए कोई कठिनाई नहीं है। जिसकी संकल्प शक्ति प्रबल है उसे तो निराश होना ही है। सारी इच्छाओं का पूरा होना संकल्प शक्ति की दृढ़ता पर निर्भर है।

किसी विचार को दिल में जगह पाने की देर है फिर वह अपनी राह आप निकाल लेता है।

यही नियम यहाँ भी काम कर रहा था। हिम्मत खां ने बलराम और पतराम को साधक बनाया। मकान कोई नहीं मिल सका। क़िले के पास जिस घर में यह रहते थे वह केवल सलामत चौधरी के कहने से इन लोगों को थोड़े दिन के लिए मिला था। फिर राज कर्मचारियों ने रुपया देकर उसे मोल ले लिया और उसे गिरवा कर मैदान कर दिया। शाही क़िले के पास ऐसे घर

का होना आपत्ति का कारण हो सकता है। सम्भव है पहिले किसी को इसका ध्यान न हुआ हो परन्तु अब इसकी आवश्यकता विशेष रूप से समझी गई।

मकान लेने की ओर से निराश होना पड़ा। हिम्मत खाँ के कहने पर बलराम और पतराम ने शाही अफ़सरों को घूस देकर घाट के पास थोड़ी सी जगह घर बनाने के लिये मोल ली। और हाता बनवाकर उसे घेर लिया। यह जगह क़िले से दूर थी और यह क़िला भी उस समय साधारण था। यह वही है जहाँ और जिसके कोठे से हुमायूँ बादशाह गिर कर मरा था। यह अब तक उजाड़ पड़ा है। दिल्ली की विचित्र दशा है। जो बादशाह आता है अपनी नई दिल्ली अलग बसाता है और नये क़िले बनवाता है। यह सिलसिला अब तक चला जाता है। दिल्ल राजा ने पहिले इसकी बुनियाद डाली थी। उसने ज्योतिषी से साइत पूछ कर लोहे का स्तम्भ स्थापित किया था। ज्योतिषी ने प्रसन्न होकर कहा कि इस की नींव पाताल में गढ़ी और शेषनाग के फण पर है। राजा को बिश्वास नहीं हुआ। उसने स्तम्भ को उखड़वा डाला। खोदते ही उसमें से लुहू का फुआरा निकल पड़ा। राजा ने चकित होकर फिर उसी जगह खम्भ को गड़वा दिया। ज्योतिषी ने कहा अब दिल्ली सदैव बनती बिगड़ती रहेगी। इसकी नींव पहिले अचल थी, अब वह बात नहीं रही। यह बात अब तक लोग कहते चले आ रहे हैं। इसका प्रमाण यह है कि कई दिल्लियां हैं जो बनती बिगड़ती आ रही हैं। मज़े की बात यह है कि नये क़िले भी बनते हैं, नया शहर भी बसाया जाता है और नाम भी अलग अलग रक्खे जाते हैं जैसे तुगलकाबाद, शाहजहांबाद इत्यादि इत्यादि। सबसे पुरानी दिल्ली महरौली कहलाती है। उसी में वह पुराना स्तम्भ है। इसी की देखा देखी कुतुबउद्दीन ऐबक ने कुतुब मीनार बनवाया। अलाउद्दीन खिलजी

ने भी मीनार बनवाना चाहा था पर वह पूरा न बन सका। उसका खन्डर अब तक है। यह दोनों अपने अपने बनवाने वालों की संकल्प शक्ति की दृढ़ता और अबलता का प्रमाण देते हैं।

यह क़िला जिसमें सुरंग लगाने की युक्ति सोची गई थी वही है जिसके कोठे से हुमायूँ बादशाह गिर कर मरा था। यमुना के किनारे के हाते से लेकर क़िले तक इन लोगों ने सुरङ्ग के खोदने का काम जारी कर दिया। काम कठिन था। यदि एक निर्दोष मनुष्य की हत्या के लिए न किया गया होता तो बहुत ही प्रशंसनीय था। जहां सुरङ्ग की हद क़िले तक थी। साथ ही साथ हाते के दूसरे ओर भी उसकी मिट्टी के निकास के लिए एक और सुरंग की खुदाई का काम हो रहा था जिसमें मिट्टी एक जगह इकट्ठी न होने पाये नहीं तो टीला बन जायगा और देखने वालों को संदेह उत्पन्न करेगा। इस काम में कितने मनुष्य लगे थे इसे कौन कह सकता है फिर भी बहुत थोड़े लोग रहे होंगे। इसमें से अधिकांश तो इन्हीं तीनों ने किया था और इसमें भी बलराम ने सबसे अधिक परिश्रम किया था क्योंकि उसे बाबर के मारने की पक्की धुन थी।

इस काम में देर तो लगी और देर लगना आवश्यक था क्योंकि यह सहज काम नहीं था परन्तु बाबर के मारने की इच्छा दिन प्रति दिन बलराम के हृदय में बढ़ती ही जाती थी। वह रात दिन बैल की तरह जुता रहता था। उधर सुरंग खोदी उधर मिट्टी जमुना में फेंकी जिससे किसी को सन्देह न होने पाये। कई सप्ताह तक काम होता रहा परन्तु किसी ने थकावट तक का नाम भी नहीं लिया।

लोग कहते हैं कि प्रेम बलवान है। ईर्षा और द्वेष में अबलता है। यह ठीक भी है परन्तु देखा जाता है कि द्वेष और ईर्षा में चित्त की एकाग्रता बहुत ही बढ़ जाती है। सुग्रीव राम का मित्र था

रामायण को पढ़ कर देखो कि बल की अधिकता का दृश्य कहाँ दिखलाई देता है ।'

भेद यह है कि प्रेम में शान्ति और द्वेष में अशान्ति है।

राग और द्वेष दो वस्तु नहीं हैं। सचचाई की दृष्टि से यह एक हैं या एक ही तत्व की दो धारें हैं।

प्रेम (राग) अपने मित्र को अपनी ओर खींचता है। और उससे मिलकर दोनों एक हो रहना चाहते हैं। द्वेष शत्रु को अपनी ओर से दूर फेंकता है और आप उसकी ओर खिंचता हुआ उसे दूरी पर ढकेलना और करना चाहता है। आकर्षक शक्ति का नियम दोनों जगह काम करता है।

सम्भव है दोनों का आदर्श एक ही हो। दोनों एक होने की इच्छा रखते हैं। एक तो मिल कर एक होना चाहता है दूसरा हटा कर आप अकेला रहने की इच्छा रखता है। बात एक है हाँ अपने भाव के बढ़ाने की आवश्यकता है।

प्रेम सुगम है। द्वेष या घृणा कठिन है। कोई बिर्ला मनुष्य संसार में ऐसा निकलता है जो घृणा (द्वेष) की हद कर देता है। प्रेम करने वाले अधिक होते हैं। प्रेम में देर लगती है परन्तु शान्ति और धैर्य्य के साथ सहन शक्ति भी बढ़ती जाती है। कभी न कभी यह हद पर पहुँच कर रहता है। घृणा में पहिले पहिल बल प्रतीत होता है और चित्त में एकाग्रता भी जान पड़ती है परन्तु इस राह में करोड़ों में से एक अपना काम करता होगा। इसको हद पर पहुँचाना महा कठिन है। यदि वह हद पर पहुँच जाय तो इसका भी वही परिणाम हो जो प्रेम का होता है।

राम का शत्रु रावण था। उसने शत्रुता की हद करदी और राम का ध्यान दिनों दिन उसके हृदय में दृढ़ होता गया। यदि ध्यान कोई वस्तु है तो रावण को राम बन जाना और राम के रूप में

बदल जाना चाहिये क्योंकि शत्रु में शत्रु का ध्यान घना होता है और सम्भव नहीं कि वह ध्यान द्वारा वैसा ही न बन जाय। रावण केवल एक था। वह राम के हाथ से यदि मारा गया तो क्या हुआ ईर्षा और द्वेष का आदर्श ही यही है कि या तो तुम रहो या मैं रहूँ, दो न रहें। अन्त में यह भी अद्वैत का विषय बन जाता है! यह संत मत का रहस्य है जिसे संत मत का कोई अनुयायी ही समझ सकता है।

शैतान ने खुदा से कहा—'तू खुदा है।' निकाला गया। मनसूर ने कहा—'मैं खुदा हूँ।' फाँसी पर चढ़ा दिया गया। दोनों का परिणाम एक ही दिखाई देता है। दोनों में अहंकार है। यही अहंकार द्वैतपना है। मुसलमानों की इस कथा में सच्चाई की झलक पाई जाती है जो विचारने ही योग्य है।

प्रेम में 'तू' और 'मैं' में से कोई भी नहीं है। यह मन का वह भाव है जो नित्य बढ़ता ही रहता है और अन्त में भेद भाव को मेटकर तब चैन लेता है। और सब भेद भाव को बढ़ाते हुये चलते हैं। इसलिये कभी कभी उन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। यदि सहन शक्ति से काम लिया और हद पर पहुँच गये तब तो आनन्द ही आनन्द है नहीं तो ठोकरें खानी पड़ती हैं।

बलराम को बाबर से बड़ी ही घृणा और चिढ़ थी। वह चाहता था कि उसे बाबर मिल जाय और उसीके हाथ से मारा जाय। यह दशा पतराम या हिम्मत खाँ की नहीं थी। पतराम फ़ल्सफ़ा पसन्द था। वह केवल अपने मित्र का साथ दे रहा था। उसे इस काम से कोई रुचि नहीं थी। हिम्मत खां स्वार्थ साधन में लगा हुआ था। बलराम की भी और कोई इच्छा नहीं थी परन्तु उसके सच्चे भाव का अनुभव करना कोई साधारण बात नहीं थी।

यह तीनों परिश्रम के साथ काम में लगे हुए थे। हिम्मत खां की हिम्मत दिनों दिन बढ़ती गई। जो चल खड़ा होता है वह कभी न कभी नियत स्थान पर पहुंच ही जाता है। शोक तो उनके लिए है जिन्होंने अभी पाँव तक नहीं उठाये। यह बराबर हिसाब लगा लगा कर बताता रहा कि अब इतनी दूरी और रह रह गई है। कई दिन पीछे उसने पता दिया कि हम क़िले के सहन में पहुंच गये, अब काम इस प्रकार हो कि कल सुबह सुरंग का ऊपरी हिस्सा खुले और कल ही बाबर का काम तमाम कर दिया जाय क्योंकि बाबर का हाल उसके जासूस क्षण क्षण दिया करते थे।

तेरहवां अध्याय

बाबर के मारने की युक्ति

योगियों और साधुओं के विषय में सुना जाता है कि वह रात को जागकर मालिक की याद करते हैं और दिन को थोड़ी बहुत नींद ले लेते हैं। यहां भी यह तीनों काम करने वाले रात ही में काम करते थे और दिन को सब घाट पर मिलते जुलते और पैसे कमाते थे। यह सारी रात काम नहीं करते थे बलराम की चलती तो वह रातों रात लगा रहता। पतराम सब को नियम बद्ध रख कर घंटे दो घंटे से अधिक काम नहीं करने देता था नियम के साथ घंटे दो घंटे का काम कम नहीं होता। थोड़े दिनों में बहुत बड़ा काम हो जाता है मनुष्य को न थकावट होती है। और न उस से जी उकताता है। अधिक परिश्रम करने से जल्द ही थकावट आ जाती है। यह इसी नियम के अनुसार काम करते थे। किसी प्रकार इनके काम की समाप्ति का समय आ गया। अब एक रात का काम और रह गया था।

तीनों हाते के अन्दर बैठे हुये बात चीत करने लगे। हिम्मत खाँ ने पृथ्वी पर नक़शा खींच कर दोनों को समझाया कि सुरंग बाबर के कमरे से दो सौ क़दम पर है। अब यह सोचना है कि इसे मकान के बीचों बीच खोलना चाहिये या अब ऊपर की ओर खुदाई हो।

बलराम—"मकान तक खुदाई हो जिससे अवसर पाकर उसे वहाँ ही मार दिया जाय।"

हिम्मत—"तब काम बढ़ जायगा" मकान की नींव पत्थर की है। उसका खोदना महा कठिन है।

पतराम—'मुझे समझाओ तब सम्मति दूँ।'

हिम्मत—'जहाँ तक सुरंग है उससे वह जगह केवल दो सौ क़दम की दूरी पर है। खोदते समय तुम ने देखा होगा कि बृक्षों की जड़ें आ गई हैं। यह वृक्ष सुरंग के एक दम ऊपर बीच में आने जाने की राह है। इधर वृक्ष है और ठीक इसी के सामने बाबर रहता है।'

पतराम—'तब सुरंग को रोक कर वृक्ष की आड़ में राह कर देनी चाहिये और बाहर निकल कर बाबर की घात में रहना चाहिये।'

हिम्मत—"बाबर नित्य ही शौचादि से निवृत होकर क़हवा पीता है और तब टहलने के लिये निकलता है।"

बलराम—"यह समय अच्छा है।"

पतराम—'परन्तु यह अकेला तो नहीं रहता होगा?'

हिम्मत—"उसके साथ वज़ीरी अमीर और बाडीगार्ड रहते हैं।"

बलराम—'कुछ हर्ज नहीं। हम उस पर एक दम टूट पड़ेंगे। घबराहट के समय बुद्धि ठिकाने नहीं रहती! मेरी कटार उछल कर बाबर के कलेजे में घुस जायगी और उसका लहू पी लेगी।'

पतराम—'इतनी जल्दी अच्छी नहीं! बाबर का मारना फिर भी खेल नहीं है।

बलराम—'मैं बाबर को पहँचानता हूँ। मेरी आँखें धोखा नहीं खा सकतीं।'

पतराम—'माना कि तुम बाबर को पहँचानते हो। बादशाही सूरत सूरतों की बादशाहत होती है। इनकी चौकसी भी चौकसी की बाहशाह हुआ करती है। जल्दी करने से लेने के देने पड़ते हैं और उसके साथ तरह तरह के भय लगे रहते हैं।'

हिम्मत—'बहुत ठीक! मानता हूँ। बहुत सोच समझ कर काम करना चाहिये।'

बलराम—'सब सोचा समझा है। अवसर मिलने दो। फिर देखना कि किस प्रकार बाज़ की तरह उड़ कर उस तक पहुँचता हूँ और बाबर को उस जगह भेजता हूँ जहाँ राना साँगा गया है।'

हिम्मत—'शाबाश! तुम काम कर लोगे। साहस से आधी सफलता तो उसी समय मिल जाती है। फिर भी सोचने की आवश्यकता है।'

बलराम चुप हो गया। पतराम सोचने लगा।

हिम्मत खाँ—'सुबह को इतनी चौकसी नहीं रहती। मेरी समझ में तो आता है कि हम लोग दिन निकलने से पहिले सुरंग खोल दें और वृक्ष की आड़ में घात लगाकर बैठें। बाबर अवश्य निकलेगा क्योंकि यह उसका स्वभाव है। उस समय बलराम उछल कर अपना काम करे।'

पतराम—'और मैं?'

हिम्मत—'तुम साथ रह कर उसके सहायक बने रहो।'

पतराम—'और तुम?'

हिम्मत—'मैं सुरंग के अन्दर रह कर देख भाल करता

रहूँगा। जहाँ बलराम ने उसे मारा मेरे चुने हुए आदमी बाहर निकल कर बाबर के सिपाहियों को साफ़ कर देंगे। फिर बाहर की ओर से क़िले पर धावा होगा। किसी न किसी प्रकार मेरे आदमी फाटक खोल देंगे और क़िला हाथ में आ जायगा।'

पतराम—'सलाह तो अच्छी है और होना भी ऐसा ही चाहिये। बलराम! तुम और भी कुछ कहना चाहते हो?'

बलराम—'मैं कहने सुनने वाला नहीं होना चाहता। कल तुम आप ही देख लोगे कि राजपूत किस तरह तलवार से खेलता है।'

हिम्मत—'शाबाश!'

पतराम ने हँस कर कहा—'हिम्मत साथ में है इसलिये हिम्मत बढ़ी हुई है।'

हिम्मत खाँ इस जुमले को सुन कर फूल गया।

पतराम—'अब वाद विवाद करना व्यर्थ है। जो कुछ सोचना था सोच लिया गया। कभी २ सोचने के विरुद्ध काम होता है। इसलिए सारी बातें समय पर छोड़ो। जो होगा देख लिया जायगा और कर लिया जायगा।'

चौदहवाँ अध्याय

बाबर की मौत

सुरंग की राह खोल दी गई। हमारे साहसी वीर अँधेरे से उजाले में आये। हिम्मत सुरंग के भीतर ही रहा। पतराम ने वृक्ष की आड़ से सब जगह देख ली। बलराम की आँखें भी यही काम करने लगीं।

दिन निकला। नौबत बजने लगी। शहनाई को सुनकर क़िले वाले उठे और अपने अपने काम में लगे। किसी को ध्यान

तक नहीं था कि शत्रु ताक में लगे हुये हैं। कोई इधर आता है। कोई उधर जाता है। बलराम पतराम को किसी ने देखा तक नहीं।

अभी बाबर के उठने में देर थी। वह नहीं उठा और न कहवा पिया। इसके सारे काम नियम के साथ हुआ करते थे। इतना दूरदर्शी मनुष्य हुआ है जो बादशाह होकर भी सिपाहियों के भेष में रहता था। इसका पहिनावा भी सीधा सादा था! पहले शराब बहुत पिया करता था परन्तु जब से राना साँग से लड़ाई जीती उसने शराब भी छोड़ दी। हाँ कहवा पिया करता था। बाबर सिपाही, बादशाह बहुत बड़ा नीति निपुण बुद्धिमान शासक सब कुछ था। साथ ही वह इतिहास लिखने वाला भी था तुज़क बाबरी उसके अपने हाथ की लिखी हुई डायरी(रोज़ नामचा) है जिसके पढ़ने से उसके समय की सारी बातों का पता लगता है। अभी तक वह सुबह की मीठी नींद ले रहा है। शाही महल के सामने भीड़ इकट्ठी हो रही है। सन्तरी और पहरेदार बराबर नंगी तलवारें लिए हुए खड़े ही रहते थे। यह भीड़ सलाम मुजरा के लिये आती थी। यह नित्य नियम था।

दक्षिण की ओर से लोग भागे हुये चले आ रहे हैं चिलपौं मची हुई है। पूछने पर भी कोई नहीं बताता कि इस भगदड़ का कारण क्या है। सब को अपनी जान की पड़ी हुई है। इतने में एक झूमता हुआ मस्त और पागल हाथी इन आदमियों के पीछे आता हुआ दिखाई दिया। इसी ने भगदड़ मचा रक्खी थी। हाथी रात के समय बिगड़ गया। महावत को चीर डाला। पाँव की ज़नजीर तोड़ डाली और जो सामने आया उसे सूँड़ से पकड़ कर पाँव से कुचल दिया। लोग भाग निकले। हाथी ने इनका पीछा किया। इसका सामना कौन करता! शाही महल के पहरेदार, चौकीदार, सन्तरी तकों को

अपनी अपनी जान के लाले पड़ गये। यह भी भाग निकले। महल के फाटक पर एक आदमी तक नहीं रहा।

इस भगदड़ में किसी मेहतर की गोद का बच्चा पृथ्वी पर गिर पड़ा। बलराम और पतराम के जी में आया कि उछलकर उसे उठा लें परन्तु यह राजपूत थे वह मेहतर का लड़का था जिसके छू जाने और छाया पड़जाने से इनका हिन्दू धर्म जाता रहता। एक यह कारण था। दूसरा कारण यह था कि यह किसी और ही धुन में लग रहे थे। इनकी आँखें तो बाबर को ढूँढ़ रही थीं।

बच्चा पृथ्वी पर पड़ा हुआ सिसक रहा है। उसे कौन उठाये और कौन बचाये! अपनी अपनी सबको पड़ी रहती है और सबकी ईश्वर को पड़ी रहती है। यह हर मनुष्य का स्वभाव है। बच्चा पड़ा हुआ है! झूमता हुआ मतवाला मस्त मतंग हाथी पहुँचा। उसका पाँव बच्चे की छाती पर पड़ने ही वाला था कि महल का दरीचा खुला और एक लम्बा जवान हाथ में गदा लिये हुये नीचे कूदा। बायें हाथ से बच्चे को उठा कर अपनी छाती से चिपटा लिया और दाहिने हाथ से मस्त हाथी के सर पर इस जोर से गदा मारी कि वह अपना पागलपन भूल गया और चिल्लाता हुआ जिधर से आया था उसी ओर चला गया। यह गदा प्रहार करने वाला महा बलवान रहा होगा जिसने हाथी तक के पाँव फेर दिये। कहने में देर लगी है। काम होते हुये समय नहीं लगता। जिस समय उस जवान ने मेहतर के बच्चे को गोद में लेकर हाथी के सर पर गदा मारी। उसके सर की पगड़ी खिसक कर पृथ्वी पर आ रही। बलराम पहँचान गया कि बाबर यही है। हाथ में तलवार लिये हुये उछल कर सामने आया—न सलाम न मुजरा! उसने कड़क कर कहा—"बाबर! यह तलवार ले मेरे कलेजे में भौंक दे। यह तेरे लुहू की प्यासी होकर आई थी।"

बाबर—"क्यों बलराम! तेरा स्वभाव कैसे बदल गया?"

बलराम—"मारने वाले से जिलाने वाला कहीं बलवान होता है। तुझे मेहतर के बच्चे की जान बचाने का ध्यान हुआ अपनी जान पर खेल गया और उसे बाल बाल बचा लिया। जो मनुष्य इस प्रकार अपनी तुच्छ प्रजा की जान बचाता है। उसे ईश्वर ने आप शाही ताज पहना कर बादशाहत करने के लिये भेजा है। तू मालिक की ओर से बादशाह बन कर आया है।"

बाबर ने तलवार हाथ से लेली और वैसे ही मेहतर के बच्चे को गोद से चिपटाये हुये बलराम को भी छाती से लगा लिया—"बहुत अच्छा! मैं तेरे कहने के अनुसार तेरी जान लेता हूँ। आज से तेरी जान तेरी नहीं रही। अब वह मेरी है। और मैं जो चाहूंगा और जिस तरह चाहूँगा उसके साथ सलूक करूँगा अपने आप को मुरदा समझ ले और मेरी जिन्दगी से जीता रह आज से तू मेरा बाडीगार्ड बनाया जारहा है।"

पतराम साथ था। उसने भी तलवार भेंट की—"मैं भी तेरे मारने में सहायक बनकर आया था। मेरा सर अपने हाथ से उतार दे जिससे आज से तेरा कोई शत्रु न रहे।"

बाबर हँसा, उसे भी छाती से लगाया—'पतराम! तू फ़िलास्फ़र है। मैं तुझे जानता हूँ। तू मेरे मारने में सहायक बना हुआ था। आज से मेरे शरीर की सच्ची रक्षा का भार तेरे सर पर रक्खा जाता है। तेरी भी जान मैंने लेली और आज मुझे राजपूतों पर सच्ची विजय प्राप्त हुई है। अब मुझे किसी शत्रु का खटका नहीं रहा।'

पन्द्रहवाँ अध्याय

बाबर मर गया

बाबर मर गया। राजपूतों का शत्रु और राना साँगा का

मारने वाला आज नहीं रहा। कौन मरता है! कौन जीता है! कौन किसी को मारता है और कौन किसी को जीवन प्रदान करता है। कोई ज्ञानी हो तो इस रहस्य को समझे।

शत्रुता जाती रही, मित्रता आ गई। द्वेष जाता रहा। उसकी जगह प्रेम ने ले ली। शत्रु मरा। मित्र उत्पन्न हुआ। शत्रु मरा या नहीं? मैं तो समझता हूँ कि वह जीता नहीं रहा। ऐसा मरा कि संसार में उसका नाम तक नहीं रहा। शत्रु का ऐसा मारने वाला गुरु का सच्चा चेला, ईश्वर का सच्चा भक्त और सारे संसार का प्रेमी बन जाता है। पतराम ने शत्रु को मार दिया। बाबर कहता है–'आज मुझे राजपूतों पर विजय मिली है।' बलराम ने इतने बड़े बादशाह के दिल को जीत लिया। यही सच्ची जीत है जो उसने प्राप्त कर ली।

प्रेम न बाड़ी ऊपजे, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा राना जो रुचे, सीस देइ ले जाय॥
प्रेम पियाला सो पिये, सीस दक्षिना दे।
लोभी सीस न दे सके, नाम प्रेम का ले॥
प्रेम प्रेम सब कोइ कहै, प्रेम न चीन्हें कोय।
आठ पहर भीना रहे, प्रेम कहावै सोय॥
जहाँ प्रेम तहाँ नेम नहिं, तहाँ न बुधि व्यवहार।
प्रेम मगन जब मन भया, कौन गिने तिथि बार॥
प्रेम छुपाया ना छुपे, जा घट परगट होय।
जो पै मुख बोले नहीं, नैन देत हैं रोय॥

अभी तक बाबर ने बलराम पतराम और मेहतर के बच्चे को अपनी गोद से अलग नहीं किया कि वही मस्त हाथी सामने से आता हुआ दिखलाई पड़ा। उस पर हाथों में आँकुश लिये हुये एक मन चला बाँका जवान बैठा हुआ था। उसने कहा—'हाथी अपने आपे में है। घबराने की कोई बात नहीं है।' यह उसी

जगह ठहरे रहे। नवयुवक उतरा, तीन बार झुक कर बादशाह को सलाम किया, फिर हाथी को उसी वृक्ष से बाँध दिया जिसके पास सुरंग ने मुँह खोल रक्खा था। बादशाह के पास आकर हाथ बाँध कर खड़ा होगया!

बाबर ने पूछा—'सलामत! तू ने हाथी को कैसे सीधा किया?"

सलामत—'धर्मावतार! महावत कई दिनों से उसे पूरा खाना नहीं देता था। यह क्रोध में था। उसे मार डाला और बिगड़ गया। दिल ही तो है। यह भागा लौटा चला जा रहा था। मैंने पुचकारा। यह ठहर गया। मैं ने समझाया कि आज से तुझे पूरा खाना मैं आप दिया करूँगा। यह समझ गया। जानवर समझदार है। मैंने कहा—'चल बादशाह को सलाम करके आ तब मैं खाना दूँगा। यह इसीलिये आया है।"

बाबर ने कुछ नहीं कहा। सलामत गया, हाथी को खोल लाया, उससे कहा—'दोनों घुटने टेक कर बादशाह को सलाम कर हाथी ने वैसा ही किया।

सलामत ने कहा—'हुजूर! हाथी को कुछ इनाम मिले।'

बाबर का हुक्म पाकर शाही भण्डार का पका हुआ दूसरे दिन का खाना हाथी के सामने रक्खा गया। उसने पेट भर कर खा लिया और बार बार सूँड उठा कर बाबर और सलामत को प्यार की दृष्टि से देखने लगा। बादशाह चकित होकर इस दृश्य को देखता रहा, इतने में सारे दरबारी वहाँ आन पहुँचे और सलाम मुजरा हुआ।

वह समय और तरह का था। बाबर बहुत बातचीत नहीं करता था। उसके मुँह से यह शब्द फारसी भाषा में निकले—'तुम सब के सब मलक (फ़रिश्ते) हो। ऐसे आदमी मैंने समरक़न्द

बुखारा क़ाबुल और क़न्धार और राजनी में नहीं देखे थे।'

सलामत ने तीन बार झुक कर फिर सलाम किया। बलराम और पतराम उसे पहँचान तो गये कि यह वही जाट चौधरी है जिसने उनकी जान बचाई थी परन्तु समय और तरह का देखकर चुप हो रहे।

बाबर ने सलामत को हुक्म दिया—"यह दोनों राजपूत मेरी जान माल के रक्षक हैं। इनके रहने सहने और खाने पीने का प्रबन्ध तुम्हारे सपुर्द किया जाता है। तीसरे पहर को तुम इन्हें लेकर महल में हाज़िर हो। वहाँ एकान्त रहेगा।"

सलामत ने तीसरी बार फिर सलाम मुजरा किया। बलराम और पतराम तो पानी पानी होगये थे फिर भी राजपूती अहंकार उनसे नहीं गया था। उन्होंने सलाम नहीं किया। वह एक दम चकित थे कि क्या था और क्या हो गया!

बाबर मेहतर के बच्चे को गोद से चिपटाये हुये महल की ओर चला गया। सलामत ने बलराम और पतराम को हाथी पर बिठाया और दोनों को अपने रहने की जगह पर क़िले के हाते में ले गया।

सोलहवाँ अध्याय

बाबर के मारने की खुशी

तीसरा पहर आया। सलामत ने शाही हुक्म से बलराम और पतराम को महल में हाज़िर किया। इस बार इन दोनों ने भी चौधरी की तरह बाबर को सलाम मुजरा किया। बादशाह ने बैठने का इशारा किया वह बैठ गये।

सलामत ने हाथ बाँधकर कहा —'हुज़ूर ने इन राजपूतों पर दया करके इन्हें जीवन प्रदान किया और अभय दान दिया हुज़ूर के अतिरिक्त संसार में कौन ऐसा कर सकता है।'

बाबर—'सलामत ! तू बहुत जल्द दरबार की बनावटी सभ्यता सीख गया। जान देने वाला कौन है ! मैं या यह दोनों ! मैंने जान नहीं दी। मैंने तो जान ली है। इन्होंने जान दी। मैंने लेली। इनका मुझ पर अहसान है।'

सलामत—'मैंने यह नहीं समझा।'

बाबर—'तू समझता कैसे ! इनके जान देने के अवसर पर तू वहाँ नहीं था।'

सलामत—"आप के तुच्छ सेवक ने अब तक नहीं समझा।"

बाबर—'क्यों बलराम ! तुम ने जान दी और मैंने तुम्हारी जान ली। यह सच है या झूठ।'

बलराम—'हुज़ूर का कहना बहुत ठीक है अब से यह जान आप की है।'

सलामत चुप चाप खड़ा रहा।

बाबर ने ताली बजाई। नौकर आया। हुक्म पाकर एक सन्दूक़ उठा लाया। बादशाह ने उसे खोला। उसमें बादशाह का रोज़नामचा (तुजुक) रहता था साथ ही और भी आवश्यक काग़ज़ थे। एक क़ैदक काग़ज़ों की निकाली जिसमें हाथ की बनाई हुई कई तसवीरें और दो नक़्शे थे। बलराम और पतराम की भी तसवीरें इनके साथ थीं। उन्हें इनके सामने रखकर कहा—"यह बलराम और पतराम की तसवीरें हैं। यह चित्तौड़ से मुख्य उद्देश्य के साथ आये थे। आये थे लेने और इनको देने पड़े। राजपूतों की उदारता भी संसार में अद्वतीय है। यह बादशाह तक को दान देने का साहस रखते हैं। मैंने तुम लोगों की धार्मिक कथायें सुनी हैं।"

सन्नाटा तो पहिले ही से था। बलराम और पतराम को पूरा विश्वास हो गया कि बाबर उनके सब कामों को भली भांति

जानता है। उसने वही शब्द दुहराये जो नईमउद्दीन रम्माल ने कहे थे। चुप! काटो तो लुहू नहीं बदन में।

बाबर ने फिर कहा—'बलराम! तुम दोनों ने जान दी और मैंने जान बूझ कर तुम्हारी जानें ले लीं। यह बड़ी क़ीमती हैं। आदमी सब कुछ देता है। जान नहीं देता न जान की खैरात मैंने कानों सुनी न आँखों देखी। हिन्दुस्तान के राजपूतों की उदारता ने इसे भी सम्भव कर दिखाया। राजपूतो! मैंने तुम्हारी भेंट स्वीकार कर ली! यदि तुम चाहो तो वापिस भी की जा सकती है।'

बलराम—"रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जाय बरु बचन न जाई॥"

बाबर! शाबाश राजपूत! यह जानें मेरी हैं परन्तु क्या मुझे अधिकार है कि जिसे चाहूँ उसे दे दूँ?'

बलराम—'बादशाह को सब कुछ अधिकार है। वह अपनी प्रजा की जान माल का मालिक है परन्तु जिसने यह भविष्य वाणी कही थी कि लेने के देने पड़ेंगे उसी ने यह भी कहा था कि देश छूट जायगा।'

बाबर हँसा—ऐसा ही होगा। तुमको दिल्ली छोड़ कर और कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है न तुम झूठ बोलोगे कि मुसलमान के साथ बैठ कर नहीं खाया और न हिन्दू तुम को अपनी जाति में लेंगे। हाथी का मुँह से बाहर निकला हुआ दाँत फिर अन्दर नहीं जा सकता। हिन्दू धर्म में ऐसा ही चला आता है। इसे तो एक बच्चा तक जानता है।'

बलराम और पतराम के रोंगटे खड़े हुये। वह समझ गये कि बादशाह को उनकी एक एक बात का ज्ञान है परन्तु यह न जान सके कि वह कैसे सब कुछ जान गया।

बाबर ने समझाया—'तुम अभय और अचिन्त रहो। तुम

मुसलमान नहीं हो और न मुसलमान बनाये जाओगे। एक समय था जब हमारे बाप दादा आधे हिन्दू थे। मैं जाति का मंगोल (मुग़ल) हूँ। हमारे पूर्वज बौद्ध थे। इसलाम में आ जाने से मुसलमान कहलाते हैं। फिर भी उनमें पुराने रस्म रिवाज पाये जाते हैं। तुमको मैंने मलक (फ़रिश्ता) कहा है जो तुम वास्तव में हो। तुम शिशोदया रघुवंशी हो परन्तु अब तुम्हारी सन्तान "मलकाना राजपूत" कहलायगी।

इस बार बलराम और पतराम ने तीन बार झुक कर सलाम किया।

बाबर ने बलराम से पूछा—"क्या मैं अपनी मिली हुई वस्तु का साक्षी किसी और को भी बना सकता हूँ ?"

बलराम—"हुजूर को सब अधिकार है।"

बाबर ने इशारा किया। सलामत सामने आया।

बाबर—"सलामत चौधरी ! तूने दो बार मेरी जान बचाई देने पर भी तूने इनाम नहीं लिया। मुँह माँगी मुराद माँगने की इच्छा प्रकट की थी। सुन सलामत ! मैं राजपूत नहीं हूँ जो मुँह माँगी मुराद दे सकूँ। यह साहस केवल हिन्दू राजाओं को ही दिया गया है। मुँह माँगी मुराद माँगने से लाभ के बदले कभी २ हानि भी उठानी पड़ती है। दशरथ ने इसका फल भोगा ; राम को इच्छा विरुद्ध बनबास देना पड़ा और आप भी मर गया। इस लिये मैं मुँह माँगी मुराद नहीं देता परन्तु आज मैं तुझे वह वस्तु देता हूँ जिसे तू सबसे बढ़ कर प्यार करता है। बलराम की जान तेरे सपुर्द करता हूँ।"

इशारा पाकर बलराम उठा। बाबर ने उसका हाथ सलामत के हाथ में देकर आशीर्वाद दिया—"जाओ ! खुशी से मिलो जुलो, फूलो, फलो, दूधों नहाओ पूतों फलो और मलकाना राजपूत के पूर्वज कहलाओ।"

बलराम ने सलामत को और सलामत ने बलराम को आश्चर्य्य और हर्ष की दृष्टि से देखा।

बाबर ने उसी समय उन्हें विदा किया और यह सलाम करके चले गये।

सत्रहवाँ अध्याय

सलामत और बलराम

बलराम—"तूने मुझे पहिले ही से पहँचान रक्खा है। मैंने तुझे नहीं पहँचाना।"

सलामत—"इसमें आश्चर्य की क्या बात है?"

बलराम—"आश्चर्य तो है।"

सलामत—"आत्मा एक रूप वाला है जो अरूपता से निकला है। प्रकृति हजारों रूप वाली है। यह भी अरूपता ही से निकली है परन्तु इसे कोई बिर्ला ही समझता होगा।"

बलराम—"मैं अन्धा था। आँखों पर पट्टी बँधी थी। तुझे नहीं पहँचान सका।"

सलामत—"आत्मा अन्धा नहीं है। प्रकृति अन्धी है। आत्मा में ज्ञान का सुझावपन है। प्रकृति में कर्म है। जब दोनों मिलते हैं तब फल प्राप्त होता है। तुम भूल से अन्धे बन रहे हो। अन्धा तो सलामत है!"

सलामत—"तो मुझ से सुनकर समझो—एक बारा था फूला फला और हरा भरा। उसके मालिक ने एक सुझाके लँगड़े और एक अन्धे को उसकी रखवाली का काम सौंपा जो और अंगों से ठीक था। आशय यह था कि फल की चोरी न हो। सुझाके लँगड़े ने अन्धे से कहा—"मुझे अपने कन्धे पर बिठा ले। मैं तुझे फलों की ओर ले चलूँगा और दोनों फल खायँगे।' ऐसा

ही हुआ और वह फल खाने लग गये। सलामत अन्धा परन्तु और अंगों से ठीक है। बलराम सुझाका परन्तु लँगड़ा है। दोनों के मेल से फल प्राप्त होगा।"

बलराम—"मैंने पहले सलामत की समझ बूझ को ऐसा नहीं समझा था।"

सलामत—"जो वस्तु नित्य देखने में आती है। उसे मुख्यता कौन देता है। संसार में अनुभव के बिना काम नहीं चलता।"

बलराम—"सच है।"

यह बात पूरी नहीं होने पाई थी कि बाबर बादशाह की ओर से पंडित और क़ाज़ी भेजे गये। हुक्म दिया गया कि सलामत और बलराम का विवाह आज ही रात को किया जायगा और बादशाह सलामत भी वहीं आयेंगे। पतराम को सुनकर आश्चर्य्य हुआ। ऐसा विवाह कभी नहीं हुआ है। कहीं बाबर का दिमाग़ तो नहीं बिगड़ गया।"

पंडित ने साइत बताई। दोनों ने बादशाह का भेजा हुआ बहुमूल्य जोड़ा पहना। पंडित ने गठबन्धन कराते समय दोनों से नाम पूछा। उसने बलराम बताया। इसने मोती सुनाया दोनों का गठबन्धन हुआ क़ाजी ने निकाह पढ़ा। दोनों पतिपत्नी होगये। इसी प्रकार पतराम का विवाह एक ग़रीब राजपूत लड़की के साथ कराया गया। यह सब रस्म बाबर के सामने ही किये गये। यही रिवाज अब तक मलकाना राजपूतों में चली आती है।

बाबर ने उनको कुछ धन द्रव्य दिया। विवाह के जलसे कई दिनों तक होते रहे जिसमें सारे लशकरी हिन्दू और मुसलमान सम्मिलित थे। दिल खोलकर दावतें दी गईं।

दूसरे दिन दिल्ली के राजपूती मुहल्ले में उन्हें रहने के लिये बादशाह की ओर से कोठियाँ दी गईं। बलराम और पतराम दोनों बादशाह के बाडीगार्ड नियुक्त हुये। यह सेवा वह जीवन

पर्य्यन्त करते रहे। उनके लड़के कितने हुये और वह कहाँ कहाँ जाकर बसे इसका न हमें पता है और न हमारे पढ़ने वालों को उसके जानने की आवश्यकता है। इसलिये उधर ध्यान देना ही व्यर्थ है।

आवश्यक बातें

(१) मोती बाई वही कमलावती है जो मरदाना भेष बना कर सलामत चौधरी के रूप में अपने पति की खोज में निकली थी। इसने पति के साथ रहने की गिरह बाँध ली थी इसलिये इसका नाम 'गिरहदार मोती' रखना उचित समझा गया। इसके दो नाम थे—मोती और कमलावती। बाबर सब कुछ जानता था परन्तु उसने प्रकट नहीं किया।

(२) सुरंग पाट दी गई।

(३) हिम्मत खाँ को बादशाह ने पकड़वाया। और उसे बहुत दूर सिपहसालार बना कर भेज दिया।

(४) बाबर की जासूसी का महकमा बहुत ही अच्छा था। उसे छोटी २ बातों तक का पता मिलता रहता था परन्तु उसमें सहन शीलता इतनी बढ़ी हुई थी कि बहुत कम लोग उसे भाँप सकते थे। उसके जासूस भेष बना कर हर जगह रहते थे। वह अधिकता के साथ रम्मालों और फ़ीक़ीरों के भेष में रहा करते थे।

(५) बलराम और पतराम जीवन पर्य्यन्त चित्तौड़ नहीं गये रम्माल की भविष्य वाणी का एक एक शब्द सच्चा होकर रहा।

सत् उपदेश

सुमिरो गुरु का नाम प्यारे! सुमिरो गुरु का नाम (टेक)

१–चलना है रहना नहीं, चलना निसन्देह।
यक दिन ऐसा आयेगा, खेह होयगी देह॥ सुमिरो०

२–आये हैं जो जायेंगे, जो जाये सो आयँ।
साधो! वह नर धन्य हैं, जो नहिं आयें न जांय॥ सुमिरो०

३–मन की सारी कल्पना, बन्ध मुक्ति का साँग।
इन से बचकर साधवा! गुरु भक्ती तू मांग॥ सुमिरो०

४–दो ही दिन के हैं सभी, कुल कुटुम्ब और मीत।
तज सब बुद्धि विचार से, गह गुरु चरनन प्रीत॥ सुमिरो०

५–दुनियाँ में भूले सभी, राजा रंक फ़क़ीर।
अपने स्वारथ में बँधे, नहिं समझे पर पीर॥ सुमिरो०

६–रात गँवाई नींद में, दिवस जगत व्यवहार।
अब लग सोच विचार का, हिये न आया बार॥ सुमिरो०

७–चेत चेत नर चेत ले, चेत चेत दिन रात।
अन्त समय पछतायगा, और मलेगा हात॥ सुमिरो०

प्रेमी पाठकों से निवेदन!

जिन सज्जनों ने चंदा M. O. द्वारा भेज दिया है और ग्राहक संख्या बढ़ाई है हम उनके भारी कृतग्य हैं भरोसा है आगे भी इसी प्रकार अन्य सज्जन भी दया दृष्टि बनाये रक्खेंगे। जिन्होंने अभी तक वार्षिक चंदा नहीं भेजा है वह कृपया मनीआर्डर द्वारा भेज दें। V. P. में नाहक १) खर्च हो जाता है।

नम्र निवेदन !

'शिव' को गुरु का नाम लेकर प्रचलित किया गया है। इसमें संदेह नहीं कि इसके प्रचलित करने और रखने में कठिनाई हुई है। पर संसार में कौन सा ऐसा काम है जो बिना परिश्रम हो जाता है। गुरु कृपा से यह भी सफल होगा और इसका कुछ न कुछ परिणाम भी होगा। जिससे पाठक जन अनविज्ञ न रहेंगे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'शिव' जैसा नाम है वैसा काम भी करेगा। 'शिव' के प्रचलित करने का अभिप्राय यह है कि लोगों का जीवन साधन सम्पन्न बने और साथ ही उनकी सभ्यता और शिष्टाचार पूर्ण रूप में निखर कर जीवन को उच्च बना दे। यह 'शिव' के लगातार पठन और उस पर विवेक विचार करने से सम्भव है। हिन्दू शास्त्रों अथवा उपनिषदों का प्रयोजन यह कभी नहीं है कि लोग व्यर्थ के शब्द जाल के गोरख धंधे में फंसे क्योंकि शब्द वास्तव में आंतरिक भावों के प्रगट करने के वाह्य वस्त्र हैं। उनके ही अन्तः में सार तत्व का सारांश गुप्त है। यह केवल शरीर है सार वस्तु आत्मा है। शब्द नाशवान है। सत्य अविनाशी है। शब्दों में मृत्यु है। सचाई में सदा अमर जीवन है। और इसी कारण बार २ कहा गया है कि जो सत के जिज्ञासु हैं वह शब्दों में कभी न अड़ें बल्कि लिखने वाले के असली प्रयोजन या अर्थ को समझें। शिव के पाठकों की बड़ी तादाद इसको न केवल महसूस करती है बल्कि अब असलीयत को भी समझने लग गई है। हिन्दू फ़िलसफ़ा जो अब तक केवल संस्कृत के विद्वानों का उत्तर दायत्व समझा जाता था अब सर्व साधारण की वस्तु बनने लग गया है।

'शिव' किसी विशेष सम्प्रदाय या समाज का आशक्त नहीं है। जहां कहीं सचाई है वह उसका सम्मान करता है और हर्ष से उसके प्रचार को तत्पर रहता है। जैनी हो या सरावजी, नास्तिक